ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(शरदुत्सव दिनांक 4 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 2023 तक) (मासिक)

वर्ष : 35 भाद्रपद-आश्विन वि०सं० 2080 अंक : 9 सितम्बर 2023

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

सरदार भगत सिंह

चन्द्रशेखर आजाद

पं. रामप्रसाद बिसमिल्ल

सरदार ऊधमसिंह

अशफाकउल्ला खान

श्यामजी कृष्ण वर्मा

सामवेद

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

karix
connect · interact

Transforming the way businesses communicate & interact with their customers

Karix empowers organisations to enable smarter, relevant, and personalised conversations with their customers and create seamless customer experiences, across the globe. Purpose-built for enterprises, Karix offers a rich suite of communication channels with superior security standards, unmatched customer support and a reliable cloud-based platform to support all communication needs.

21+
years of industry experience with a stronghold in all major industries

2,000+
Enterprise customers

100+ BN
Omni-channel messages processed annually

24x7
Support provided by over 200 engineers

10,000+
Business processes supported

CUSTOMER ENGAGEMENT SOLUTIONS SUITE

- WhatsApp
- A2P Messaging
- Email
- RCS
- Voice
- Marketing Automation
- Campaign Automation
- Chatbots
- Live Agent Chat

WHY DO FORTUNE 1000 BUSINESSES PREFER KARIX?

- Best in class connectivity
- High available systems
- Hybrid cloud infrastructure
- Deep domain understanding

For more details, visit us at www.karix.com or write to us at marketing@karix.com

vk3e

ioeku

o"k&35 vd&9

Hkkæin&vkf'ou foØeh 2080 flrEcj 2023

lf'V lor 1]96]08]53]124 n;kuUnkCn % 199

★

&% lj{kd %&
Lokeh fpÙk'ojkuUn ljLorh
ek- % 9410102568

★

&% v/;{k %&
Jh fot; dekj
ek- % 9837444469

★

&% lfpo %&
ie idk'k 'kek
ek- % 9412051586

★

&% vk| lEiknd %&
Loå Jh nonÙk ckyh

★

&% e[; lEiknd %&
Mkå Ñ".k dkUr ofnd 'kkL=h
vorfud
ek- % 9336225967

★

&% lgk;d lEiknd %&
vorfud
euekgu dekj vk;
ek- % 9412985121

★

&% dk;ky; %&
ofnd lk/ku vkJe] rikou]
rikou ekx] ngjknu&248008
njHkk"k % 0135&2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

lEikndh;	Mk- Ñ".kdkUr ofnd 'kkL=h	2
çFkee.Mye&çFkeläe	Mk- Ñ".kdkUr ofnd 'kkL=h	3
ofnd lkfgR; dk ifjp;	Mk- Ñ".kdkUr ofnd 'kkL=h	6
thou dh lQyrk onk d Lok/;k;--------	euekgu dekj vk;	10
ij.kk dh lkr & i=o/k		14
'kjnRlo		15
cãfo|k vkj mlds Hkn	Jh gfj'pUæ oek ofnd	19
ge lcd ij.kk i#"k ;kxhjkt JhÑ".k-----		22
;K D;k gkrk g vkj dl fd;k tkrk g\	euekgu dekj vk;	23
ck/k dFkk;	egkRek vkuUn Lokeh ljLorh th	26
fofHkUu jkxk d mipkj e ;K dk i;kx		31

ofnd lk/ku vkJe rikou] ngjknu d cd [kkrk dk fooj.k

nku grq cd [kkr dk uke	cd dk uke o irk	cd vdkmUV u-	IFSC Code
vkJe dk nku nu d fy;s			
1- ^ofnd lk/ku vkJe**	dujk cd] Dykd Vkoj ckp ngjknu	2162101001530	CNRB0002162
ioeku if=dk 'kYd			
2- ^ioeku**	dujk cd] Dykd Vkoj ckp ngjknu	2162101021169	CNRB0002162
rikou fo|kfudru Ldy d fy;s			
3- ^rikou fo|k fudru**	;fu;u cd] rikou jkM] ukykikuh] ngjknu	602402010003171	UBIN0560243

ioeku if=dk e foKkiu d jV l

1- dyM Qy it — #- 5000@& ifr ekg

2- Cyd ,.M 0gkbV Qy it — #- 2000@& ifr ekg

3- Cyd ,.M 0gkbV gkQ it — #- 1000@& ifr ekg

lnL;k d fy, ioeku if=dk d jV l

1- okf"kd eY; — #- 200@& okf"kd

2- 15 o"k ¼vkthou½ d fy, eY; — #- 2000@&

ukV% ioeku if=dk QVdj foØ; d fy, miyC/k ugh gA

ioeku e idkf'kr y[kk e 0;Dr fopkj lEcfU/kr y[kd d gA lEiknd vFkok idk'kd dk mul lger gkuk vko';d ugh gA fdlh Hkh fookn d ifrokn gr U;k;{k= ngjknu gh gkxkA vkifÙk dh vof/k idk'ku frfFk l ,d ekg d Hkhrj gh ekuh tk;xhA

lEikndh;

वेद को जानने के लिये शुद्ध वेदार्थ आवश्यकता है

प्राचीनकाल से ही वेद को समझने के प्रयास होते रहे हैं, कभी यह प्रयास संहिताकरण के रूप में, कभी पदपाठ पद्धति के रूप में, कभी ब्राह्मण ग्रन्थों के रूप में, कभी निघण्टु और निरुक्त परम्परा की प्रतिष्ठा के रूप में और कभी भाष्य नाम से प्रचलित व्याख्यान पद्धति के रूप में होते रहे हैं। इस परम्परा में मानव के कदम कालक्रम से सूक्ष्मता से स्थूलता की ओर बढ़ते रहे हैं। हम यह कह सकते हैं कि जब-जब पूर्ववर्ती पीढ़ियों को यह लगा कि आगे आने वाले समय में लोग वेद को समझ नहीं पायेंगे, तब-तब पहले की अपेक्षा अधिक विस्तृत और सुस्पष्ट वेदव्याख्या पद्धति का गठन करने का प्रयास किया जाता रहा है। यह भी एक जिज्ञासा का विषय हो सकता है कि वेदराशि की सुरक्षा उसके स्वरूप पर निर्भर है या फिर अर्थराशि पर भी ? गोपथ ब्राह्मण में कुछ भिन्न प्रकार से इसका समाधान करते हुए कहा गया है कि कल्प, रहस्य, ब्राह्मण, उपनिषत् इतिहास, अन्वाख्यान, पुराण, स्वरसंस्कार, निरुक्त, अनुशासन, अनुमार्जन के साथ वेदों का निर्माण हुआ। उक्त वक्तव्य के आधार पर यह निष्कर्ष ग्रहण किया जा सकता है कि वेद के अध्ययन के लिये उपरोक्त प्रकार का साहित्य अपेक्षित है, उसके बिना उसको समझ पाना सम्भव नहीं है। आचार्य यास्क के मत में भी अर्थ ही महत्त्वपूर्ण है, इसी उद्देश्य से उनके द्वारा निरुक्त का प्रणयन किया गया है। उनका कहना है-

स्थाणुरयंभारहारः किलाभूदधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम् ।
योऽर्थज्ञइत्सकलंभद्रमश्नुतेनाकमेतिज्ञानविधूतपाप्मा।।

जो वेद को पढ़कर उसके अर्थ को नहीं जानता, यह भारवाहक के समान है। जो अर्थ को जानने वाला है, वह सम्पूर्ण कल्याण को प्राप्त करता है और अन्त में ज्ञान से निर्मल चरित्र होकर वह मोक्ष को उपलब्ध होता है। यास्क कहते हैं- जो हमने पढ़ लिया अर्थात् उच्चारण मात्र कर लिया, परन्तु उसके मर्म को नहीं जाना यह कार्य उसी प्रकार का है जैसे अग्नि से सम्पर्क न होने के कारण शुष्क होते हुए भी काष्ठ में से अग्नि प्रकट नहीं होती। क्योंकि काष्ठ का प्रयोजन काष्ठ होने मात्र में निहित नहीं है, उसकी उपयोगिता उसके ईंधन होने में है, उसमें से अग्नि के प्रकट होने में है। ठीक इसी प्रकार वेद की उपयोगिता शब्द में न होकर उसके अर्थ में निहित है। वेद का वेदत्व उसके ज्ञान में है। वेद ज्ञानरूप हैं और उस ज्ञान को अर्थ के बिना समझा जा ही नहीं सकता। वेद को जानने के लिये शुद्ध वेदार्थ का अध्ययन करना आवश्यक है। इन पंक्तियों के लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत भाष्य का सुबोध अर्थ करने का प्रयास किया है और प्रथम चालीस खण्डों का पहला पुस्तक प्रकाशित हो चुका है, जिसका कुछ अंश प्रत्येक माह पवमान पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा। यह वेद स्वाध्याय विशेषांक सुधी पाठकों को समर्पित करते हैं। इस माह से हम पत्रिका के देहरादून से प्रकाशन के दसवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। एतदर्थ आदरणीय सचिव श्री प्रेमप्रकाश शर्मा और सम्पादक श्री मनमोहन कुमार आर्य तथा सरस्वती प्रैस का प्रबन्धन व कर्मचारी साधुवाद के पात्र हैं।

-डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

प्रथममण्डलम्-प्रथमसूक्तम्

-डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

टिप्पणी-प्रथममण्डल के प्रथमसूक्त के प्रथम दो मन्त्रों का सुबोथ अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है-

(१) अथादिमस्य नवर्चस्य सूक्तस्य मधुच्छन्दा ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।

होतारं रत्नधातमम्।।

स्वर सहित पद पाठ

अग्निम्। ईळे। पुरःऽहितम्। यज्ञस्य। देवम्।

ऋत्विजम्। होतारम्। रत्नऽधातमम्।।

विषयः- तत्राद्ये मन्त्रेऽग्निशब्देनेश्वरेणात्मभौतिकावर्थावुपदिश्येते।

विषय (भाषा)- यहाँ प्रथम मन्त्र में अग्नि शब्द करके ईश्वर ने अपना और भौतिक अर्थ का उपदेश किया है।

अन्वयः-अहं यज्ञस्य पुरोहितमृत्विजं होतारं रत्नधातमं देवमग्निमीळे।।१।।

सन्धिविच्छेदसहितोऽन्वयः- अहं यज्ञस्य पुरोहितमृत्विजं होतरं रत्नधातमं देवं अग्निम् ईळे।।१।।

पदार्थान्वयः(म.द.स.)-(अहम्) मैं (यज्ञस्य) विद्वान् लोगों के सत्कार सङ्गम, महिमा और कर्म के देने वाले (पुरोहितम्) जो जगत् की उत्पत्ति से पहले उसे धारण करता है (ऋत्विजम्) जो बारम्बार उत्पत्ति के समय में स्थूल सृष्टि के रचनेवाले तथा ऋतु-ऋतु में उपासना करने योग्य है (होतारम्) देने और ग्रहण करनेवाले, (रत्नधातमम्) मनोहर पृथिव्यादि वा सुवर्ण आदि रत्नों के धारण करने वाले, (देवम्) और सब पदार्थों को प्रकाशित करनेवाले (अग्निम्) परमेश्वर की (ईळे) हम स्तुति अथवा प्रार्थना करते हैं।

महर्षिकृत भावार्थ का भाषानुवाद-इस मन्त्र में श्लेषालङ्कार से दो अर्थों का ग्रहण होता है। पिता के समान कृपा करनेवाला परमेश्वर सब जीवों के हित और सब विद्याओं की प्राप्ति के लिये कल्प-कल्प के आदि में वेद का उपदेश करता है। जैसे पिता वा अध्यापक अपने शिष्य या पुत्र को शिक्षा करता है कि वह ऐसा करे या ऐसा वचन कहकर, सत्य वचन बोले, इत्यादि शिक्षा को सुनकर बालक वा शिष्य भी कहता है कि वह सत्य बोलेगा, पिता और आचार्य्य की सेवा करेगा, झूठ नहीं कहेगा। इस प्रकार जैसे परस्पर शिक्षक लोग शिष्य या लड़कों को उपदेश करते हैं, वैसे ही अग्निमीळे० इत्यादि वेदमन्त्रों में भी जानना चाहिये। क्योंकि ईश्वर ने वेद सब जीवों के उत्तम सुख के लिये प्रकट किया है। इसी वेद के उपदेश का परोपकार फल होने से अग्निमीळे० इस मन्त्र में ईडे यह उत्तम पुरुष का प्रयोग भी है। (अग्निमीळे०) इस मन्त्र में परमार्थ और व्यवहार विद्या की सिद्धि के लिये अग्नि शब्द करके परमेश्वर और भौतिक ये दोनों अर्थ लिये जाते हैं। जो पहिले समय में आर्य लोगों ने अश्वविद्या के नाम से शीघ्र गमन का हेतु शिल्पविद्या आविष्कृत की थी। वह अग्निविद्या की ही उन्नति थी। परमेश्वर के आप ही आप प्रकाशमान सब का

प्रकाशक और अनन्त ज्ञानवान् होने से और भौतिक अग्नि के रूप में दाह, प्रकाश, वेग, छेदन आदि गुण और शिल्पविद्या के मुख्य साधक होने से अग्नि शब्द का प्रथम ग्रहण किया है ।।१।।

(ऋग्वेद ०१.१.०१)

ऋषिः-मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रः देवता-अग्निः छन्दः- पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री स्वरः-षड्जः।

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।

स देवाँ एह वक्षति?

स्वर सहित पद पाठ

अग्निः। पूर्वेभिः। ऋषिऽभिः। ईडयः। नूतनैः।

उत। सः। देवान्। आ। इह। वक्षति।।

विषयः- सोऽग्निः कैः स्तोतव्योऽन्वेष्टव्यगुणो वास्तीत्युपदिश्यते।

विषय(भाषा)- उक्त अग्नि किन से स्तुति करने वा खोजने योग्य है, इसका उपदेश इस मन्त्र में किया है।

अन्वयः-योऽयमग्निः पूर्वेभिरुत नूतनैर्ऋषिभिरीड्योऽस्ति, स एह देवान् वक्षति समन्तात्प्रापयतु ।।२।।

सन्धिविच्छेदसहितोऽन्वयः-यः अयम् अग्निः पूर्वेभिःउत नूतनैः ऋषिभिः ईडयः अस्ति, स एह देवान् वक्षति समन्तात् प्रापयतु ।।२।।

पदार्थान्वयः(म.द.स.)-(यो) जो (अयम्) यह (अग्नि) परमेश्वर या भौतिक अग्नि (पूर्वेभिः) पूर्व वर्तमान या पूर्व समय के विद्वान् (उत) भी (नूतनैः) वेदार्थ के पढ़नेवाले ब्रह्मचारी तथा नवीन तर्क और कार्यों में ठहरने वाले प्राणी (ऋषिभिः) मन्त्रों के अर्थों को समझने वाले विद्वान् द्वारा (ईडयः) स्तुति करने योग्य (अस्ति) है (सः) वह परमेश्वर या भौतिक अग्नि (आ) चारों ओर से (इह) इस वर्तमान संसार या जन्म में (देवान्) दिव्य इन्द्रियों और विद्या आदि गुणों वाले देवों या दिव्य ऋतुओं के भोगवालों को (वक्षति) प्राप्त होता है।।२।।

महर्षिकृत भावार्थ का भाषानुवाद-जो मनुष्य सब विद्याओं को पढ़ के अन्यों को पढ़ाते हैं तथा अपने उपदेश से सब का उपकार करनेवाले हैं या हुए हैं वे पूर्व शब्द से, और जो कि अब पढ़नेवाले विद्या ग्रहण के लिये अभ्यास करते हैं, वे नूतन शब्द से ग्रहण किये जाते हैं, क्योंकि जो मन्त्रों के अर्थों को जाने हुए धर्म और विद्या के प्रचार, अपने सत्य उपदेश से सब पर कृपा करनेवाले, निष्कपट पुरुषार्थी, धर्म की सिद्धि के लिये ईश्वर की उपासना करनेवाले और कार्यों की सिद्धि के लिये भौतिक अग्नि के गुणों को जानकर अपने कर्मों के सिद्ध करनेवाले होते हैं, वे सब पूर्ण विद्वान् शुभ गुण सहित होने पर ऋषि कहाते हैं, तथा प्राचीन और नवीन विद्वानों के तत्त्व जानने के लिये युक्ति प्रमाणों से सिद्ध तर्क और कारण वा कार्य जगत् में रहनेवाले जो प्राण हैं, वे भी ऋषि शब्द से गृहीत होते हैं। इन सब से ईश्वर स्तुति करने योग्य और भौतिक अग्नि अपने-अपने गुणों के साथ खोज करने योग्य है। और जो सर्वज्ञ परमेश्वर ने पूर्व और वर्त्तमान अर्थात् त्रिकालस्थ ऋषियों को अपने सर्वज्ञपन से जान के इस मन्त्र में परमार्थ और व्यवहार ये दो विद्या दिखलाई हैं, इससे इसमें भूत वा भविष्य काल की बातों के कहने में कोई भी दोष नहीं आ सकता है, क्योंकि वेद सर्वज्ञ परमेश्वर का वचन है। वह परमेश्वर उत्तम गुणों को तथा भौतिक अग्नि व्यवहार- कार्यों में संयुक्त किया हुआ उत्तम-उत्तम

भोग के पदार्थों का देनेवाला होता है। पुराने की अपेक्षा एक पदार्थ से दूसरा नवीन और नवीन की अपेक्षा पहला पुराना होता है। देखो, यही अर्थ इस मन्त्र का निरुक्तकार ने भी किया है कि जो प्राकृत जन अर्थात् अज्ञानी लोगों ने प्रसिद्ध भौतिक अग्नि पाक बनाने आदि कार्यों में लिया है, वह इस मन्त्र में नहीं लेना, किन्तु सब का प्रकाश करनेहारा परमेश्वर और सब विद्याओं का हेतु, जिसका नाम विद्युत् है, वही भौतिक अग्नि यहाँ अग्नि शब्द से कहा गया है। (अग्निः पूर्वे०) इस मन्त्र का अर्थ नवीन भाष्यकारों ने कुछ का कुछ ही कर दिया है, जैसे सायणाचार्य ने लिखा है कि-(पुरातनैः) प्राचीन भृगु, अङ्गिरा आदियों और नवीन अर्थात् हम लोगों को अग्नि की स्तुति करना उचित है। वह देवों को हवि अर्थात् होम में चढ़े हुए पदार्थ उनके खाने के लिये पहुँचाता है। सो यह बड़े आश्चर्य की बात है, जो ईश्वर के प्रकाशित अनादि वेद का ऐसा व्याख्यान का क्षुद्र आशय और निरुक्त शतपथ आदि सत्य ग्रन्थों से विरुद्ध होवे, वह सत्य कैसे हो सकता है।।२।।

(ऋग्वेद ०१.०१.०२)

शुभ समाचार

ofnd lk/ku vkJe] rikou ngjknu }kjk vkfFkd :i l detkj rFkk t:jren ifjokjk d cPpk dk ofnd lLdkjk l ;Dr dj leFk cuku gr in'k d fofHkUu lnj {k=k l 12 cPpk dk vkJe e io'k fn;k x;k gA bu cPpk dk vkJe d }kjk fu'kYd Hkkstu] f'k{kk] vkokl rFkk lHkh idkj dh vU; lfo/kk; tl ;fuQke] tr] pliy] diM] dkih] fdrkc vkfn inku dh tk jgh gA cPpk d n[kHkky gr ,d ;kX; if'k{kd Jh ioh.k th dh fu;fDr dj nh xbi g tk vkJe e jgdj cPpk dh mfpr n[kHkky] fnup;k] gkeod rFkk ofnd fl)kUrk dk ifjKku ,o vk;ohj if'k{k.k djk;xA

fofnr g fd vkJe dh viuh dkbi vkenuh u gku d i'pkr Hkh bu lHkh /kkfed] vk; lekt gr mi;kxh ,o fgrdkjh dk;Øek dk vk;ktu vki tl nkuohjk d lg;kx l gh lHko gk ik jgk gA cPpk d ikyu&iks"k.k gr vkJe }kjk viu Lrj ij 'kgj d nkunkrkvk l lEidi fd;k tk jgk gA cPpk ij ,d ekg e yxHkx 2000@& #i; ifr cPpk [kp vif{kr gA vki ,d ;k ,d l vf/kd cPpk dk lj{k.k ndj vkJe dh vkfFkd enn dj ldr gA

vr% vki lHkh nku&nkrkvk l foue fuonu g fd mDr lEcU/k e viu lkeF;kulkj cPpk d vkokl ,o f'k{kk ij gku oky ifrekg 0;; #i;&2000@& vkJe dk nkuLo:i inku dju dh Ñik djA 1 o"k dh /kujkf'k #i;&24000@& ,d e"r Hkh nh tk ldrh gA vkJe dk fn;k x;k nku vk;dj foHkkx dh /kkjk 80th ¼vkn'k l[;k½ d vUrxr dj eDr gA

ge vk'kk g fd cPpk dh f'k{kk rFkk ik"k.k d en e vki lHkh nku&nkrk viuk lg;kx ndj i.; d Hkkxh cuxA vki xg\ pkoy] nky] phuh] ?kh] ry vkfn Hkh nku e n ldr gA

vkJe d [kkr dk fooj.k fuEu idkj l g&

[kkr dk uke&	ofnd lk/ku vkJe
[kkrk l[;k&	**2162101001530**
vkb-,Q-lh- dkM&	**CNRB0002162**

vki fuEu D;-vkj- dkM d }kjk iVh,e] xxy i] Qku i vkfn d ek/;e l Hkh nkujkf'k vkJe d [kkr e Hkt ldr gA Ñi;k nkujkf'k Hkstu d i'pkr ekckbu 9412051586 ij 0gkVl,i d ek/;e l lpuk inku dj rkfd vkidk nku dh jlhn if'kr dh tk ldA

वैदिक साहित्य का परिचय

-डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

भारत की प्राचीन वैदिक परम्परा जिसमें सनातनी तथा आर्यसमाजी दोनों सम्मिलित हैं, वेदों को अपौरुषेय मानते हैं। न्यायदर्शन के अनुसार वेद सर्वगुण सम्पन्न पुरुष परमात्मा द्वारा रचित हैं। मीमांसा के अनुसार वेद अपौरुषेय हैं, किसी पुरुष द्वारा रचित नहीं। फलत: अनादि हैं। इनकी धारणा है कि मानव-सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने मनुष्य को अपने जीवन को जीने की कला सिखाने के लिए निखिल ज्ञान के भण्डार वेदों का ऋषियों के माध्यम से उपदेश दिया था। वेद-मन्त्रों को परमात्मा ने विभिन्न ऋषियों के अन्त:करणों में उपदिष्ट किया, तत्पश्चात् इन ऋषियों ने इन्हें परवर्ती ऋषियों को प्रदान किया। इस प्रकार गुरु-शिष्य परम्परा से वेदज्ञान हम तक पहुंचा है।

वेदों के रचनाकाल को लेकर पाश्चात्य तथा परम्परागत भारतीय मत में स्पष्ट अन्तर है। पाश्चात्य लेखकों ने मन्त्रों के रचनाकाल को लेकर विभिन्न अटकलें लगाई हैं । मैक्समूलर तथा अन्य वेदाभ्यासियों ने मन्त्र-रचनाकाल को लेकर स्वमत प्रकट किये हैं। तथापि सर्वानुमति से स्वीकार करते हैं कि वेदों के यथार्थ रचना-काल का निर्णय करना सहज नहीं। दयानन्द सरस्वती के अनुसार ऋग्वेद का प्रकाश 'अग्नि' संज्ञक ऋषि को, यजुर्वेद का ज्ञान 'वायु' नाम वाले ऋषि को, सामवेद का ज्ञान 'आदित्य' ऋषि को तथा अथर्ववेद का ज्ञान 'अंगिरा' ऋषि को हुआ। इन्होंने इस दिव्य, अलौकिक ज्ञान को आत्मसात् कर इसका प्रचार मनुष्य जाति में किया।

सनातनी मत के अनुसार वेदज्ञान का आदि प्रदाता 'ब्रह्मा' था। वे मानते हैं कि आरम्भ में वेद एक ही था और महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास ने इन्हें चार संहिताओं में पृथक्-पृथक् प्रस्तुत किया। वेद विभाजन करने के कारण कृष्णद्वैपायन की वेदव्यास संज्ञा हुई। किन्तु चारों वेदों का पृथक्-पृथक् उल्लेख तो व्यास पूर्व काल में भी मिलता है अत: यह धारणा उचित प्रतीत नहीं होती है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि ऋग्वेदादि चार वेद संहिताएं संसार का सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ समूह है। भारतीय परम्परा वेदों को परमपिता परमात्मा का शाश्वत ज्ञान मानती है। जब कि पाश्चात्य अध्येता उन्हें आर्य ऋषियों द्वारा समय-समय पर रचित मन्त्रों का संकलन मानते हैं तथापि इस बात को लेकर कोई मतभेद नहीं है कि संसार के पुस्तकालय में ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ है। वेद चतुष्टय के अन्तर्गत क्रमश: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की गणना होती है। मन्त्रों का समूह या संकलन होने से इन्हें संहिताएं कहा जाता है। आगे चलकर जब मूल मन्त्र संहिताओं में संगृहीत मन्त्र समुदाय की व्याख्या और विवेचना का सवाल आया तो बाद के ऋषियों ने प्रत्येक संहिता की व्याख्या में 'ब्राह्मण' संज्ञक ग्रन्थों की रचना की ।

ब्राह्मण ग्रन्थों को वेदों का क्रमबद्ध भाष्य, टीका या व्याख्या नहीं कहा जा सकता है। कालान्तर में जब वेदानुयायी आर्यजनों में यज्ञों का प्रचार हुआ तो इस याज्ञिक कर्मकाण्ड की दार्शनिक व्याख्या तथा यज्ञों में प्रचलित क्रियाओं के उद्देश्यों की सतर्क विवेचना ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई। वैसे तो ब्राह्मण ग्रन्थों की संख्या पर्याप्त है किन्तु उल्लेखनीय चार हैं।

ऋग्वेद के ब्राह्मण की 'ऐतरेय' संज्ञा है जिसका रचयिता ऐतरेय महीदास माना जाता है। यजुर्वेद के विभिन्न प्रसंगों तथा उसके आधार पर कालान्तर में विकसित नाना यज्ञ-यागों की विस्तृत व्याख्या 'शतपथ' ब्राह्मण में मिलती है जो महर्षि याज्ञवल्क्य प्रणीत है। याज्ञवल्क्य मिथिलाधिपति राजा जनक के समकालीन थे। 'जनक' मिथिला के राजाओं की एक सामान्य उपाधि थी। राम के श्वसुर सोरध्वज जनक तथा उनके भाई कुशध्वज जनक का उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में मिलता है, फिर भी यह कहना कठिन है कि ऋषि याज्ञवल्क्य किस जनक के राज्यकाल में थे। उनकी चर्चा शतपथ के अतिरिक्त छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक उपनिषदों में मिलती है।

सामवेद के ब्राह्मण 'षड्विंश' तथा पञ्चविंश संज्ञक हैं। इनमें सामवेद के मन्त्रों के गानविषयक समस्याओं का समाधान किया गया है। अर्थववेद का ब्राह्मण 'गोपथ' संज्ञक है। समयान्तर में मूल वेदों की अनेक शाखाओं का प्रचलन हुआ। दयानन्द सरस्वती के अनुसार चारों वेदों की ११२७ शाखाएं हैं। इनमें ऋग्वेद की शाकल और वास्कल, यजुर्वेद की माध्यन्दिन, सामवेद की कौथुम तथा अथर्ववेद की शौनक संज्ञक शाखाओं को व्यवहारतः मूलवेद माना जाता है । शाखाओं की रचना वेदों की व्याख्या की दृष्टि से की गई थी। तथापि व्याख्या का यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि उनमें मन्त्रों का विशद् तात्पर्य व्याख्यात किया गया है ।

शाखाओं को ऋषि प्रणीत माना जाता है जबकि मूल संहिताओं को ईश्वरोक्त कहा गया है। भारत का सनातनी समुदाय मूल संहिताओं सहित ११३१ शाखा समूह को वेद की संज्ञा देता है तथा उन्हें अपौरुषेय मानता है जबकि दयानन्द सरस्वती की सम्मति में वेदों का संहिता मात्र ही अपौरुषेय है तथा शाखाओं का प्रणयन विभिन्न ऋषियों द्वारा हुआ था। तथ्य यह है कि जब विभिन्न ऋषियों के आश्रमों में वेदों के अध्ययन-अध्यापन की परम्परा का प्रचलन हुआ तो उन अध्यापक ऋषियों ने संहिता भाग को पढ़ाने और समझाने की दृष्टि से मूल वेदों में अपनी सुविधानुसार देश, काल तथा परिस्थिति के अनुरूप, यत्र तत्र परिवर्तन कर लिये।

कहीं कहीं नवीन प्रसंग भी जोड़ दिये गये। उदाहरणार्थ- यजुर्वेद के राज्याभिषेक प्रसंग में मूल संहिता कहती है-'एषः वो अमी राजा', जब कि शाखाकार ने इस वाक्य में आये राजा के सामान्य निर्देश को 'एषः वो भरतो राजा' या 'एषः वो कुरवो राजा' के रूप में बदल कर अपने सम-सामयिक शासक का नाम वहां रख दिया। इसी प्रकार का शब्द-परिवर्तन, क्रम परिवर्तन, कुछ नया जोड़ना आदि शाखाओं के रूप में होता रहा। अतः शाखाओं को सहिताओं के तुल्य स्वतः प्रमाण नहीं माना जाता।

ब्राह्मण-ग्रन्थों में आये दार्शनिक प्रसंगों और आध्यात्मिक विषयों को 'आरण्यक' नाम देकर पृथक्शः संगृहीत किया गया। यह माना जाता है कि इन ग्रन्थों के आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रकरण

इतने सूक्ष्म गूढ़ तथा ऋषियों की तत्त्वदर्शी मेधा से प्रसूत हैं कि सामान्य सांसारिक या नागर वातावरण में इनका अध्ययन चिन्तन सम्भव ही नहीं है। इनको समझने के लिए आरण्यक वातावरण (एकान्त तथा वनों का वातावरण) की आवश्यकता है। ऋषियों के एकान्त आश्रमों तथा उन्हीं के द्वारा संचालित गुरुकुलों में इन शास्त्रों का अध्ययन उपयुक्त माना गया। फलतः ब्राह्मण के उस भाग को 'आरण्यक' की संज्ञा मिली जो गूढ़ तत्त्व मीमांसा तथा आध्यात्मिक प्रसंगों की विवेचना करता था।

उपनिषदों को भी वैदिक वाङ्मय की श्रेणी में रखना उपयुक्त है। ये ग्रन्थ अध्यात्म विद्या तथा आर्यों के सर्वोच्च तत्त्वदर्शन के आकर ग्रन्थ हैं। इनका अध्ययन आध्यात्मविद् तथा तत्त्वार्थवेत्ता गुरुओं के सान्निध्य में बैठ कर किया जाता था, अतः इन्हें 'उपनिषत्' संज्ञा मिली। वेदों के कथ्य के अनुकूल उपनिषत् तो संख्या में ग्यारह हैं जब कि समय समय पर उत्पन्न और विकसित धार्मिक और दार्शनिक समुदायों ने अपने-अपने मन्तव्यों की सिद्धि के लिए नाना साम्प्रदायिक उपनिषद् बना लिये। इन सब की संख्या सौ से अधिक है जब कि प्रामाणिक ११ उपनिषद् निम्न हैं- ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक, छान्दोग्य तथा श्वेताश्वतर। इनमें कहीं कहीं कथाओं-आख्यायिकाओं के माध्यम से तो कहीं गुरु शिष्य-संवाद की शैली में परम तत्त्व परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति, सृष्टिरचना, जीवों का आवागमन, मोक्ष आदि दार्शनिक विषयों की विवेचना मिलती है।

सामान्यतया संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषत् का सम्मिलित ग्रन्थ समूह 'वैदिक वाङ्मय' की संज्ञा ग्रहण करता है। तथापि यह ध्यान रहे कि मूल संहिताएं ही ईश्वरोक्त अपौरुषेय हैं जब कि शाखा ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ऋषि प्रणीत हैं। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया वेदों के अध्ययन अध्यापन में कठिनाइयां आने लगीं वेदों की भाषा सामान्य लौकिक संस्कृत से प्रकृत्या भिन्न है। इसका कारण इसके शब्दों की व्युत्पत्ति शब्दों का अर्थ विस्तार आदि विशिष्ट अध्ययन की अपेक्षा रखते हैं। इन्हीं कारणों से छः वेदांगों का अध्ययन आवश्यक समझा गया। वेदमन्त्रों में निहित अर्थ को हृदयंगम करने के लिए वेदांगों का अध्ययन आवश्यक माना गया है। महर्षि पतञ्जलि का कहना है कि सच्चे ब्राह्मण को बिना किसी स्वार्थ भावना को मन में रखे, निष्कारण छहों वेदांगों सहित वेदों का अध्ययन और चिन्तन करना चाहिए। वेदांगों को लेकर पर्याप्त साहित्य लिखा गया है यहां उसका सामान्य परिचय ही अपेक्षित है।

१. **शिक्षा**- वर्णोच्चारण तथा वैदिक भाषा के प्रयोग को सरल बनाने के लिए शिक्षा ग्रन्थ लिखे गये, पाणिनीय शिक्षा आदि।

२. **व्याकरण**- शब्दार्थ सम्बन्ध तथा भाषा की संरचना को जानने के लिए व्याकरण शास्त्र निर्मित हुआ। पाणिनीय अष्टाध्यायी तथा उसकी व्याख्या में लिखे गये पातञ्जल महाभाष्य को इस शास्त्र का मुख्य ग्रन्थ माना जाता है। इसे आर्ष व्याकरण की संज्ञा दी गई है।

३. **निरुक्त**- वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति को बताने वाला शास्त्र निरुक्त है। इस विद्या का प्रामाणिक ग्रन्थ यास्करचित निरुक्त है। यद्यपि इसमें यास्क

पूर्व के अनेक निरुक्त रचयिताओं का उल्लेख मिलता है। निरुक्त शास्त्र के अनुसार वैदिक पदों का धात्वर्थ ग्रहण करना चाहिए। एक धातु अनेक अर्थ देनेवाला होता है, अत: एक वैदिक शब्द प्रसंग के अनुसार विभिन्न अर्थों का द्योतन करता है।

४. **छन्द**- वैदिक मन्त्र छन्दोबद्ध हैं। गायत्री, बृहती, अनुष्टुप, त्रिष्टुप आदि। विभिन्न वैदिक छन्दों का ज्ञान मन्त्रार्थ में सहायक है । आचार्य पिंगल रचित छन्द:शास्त्र इस विद्या का प्रामाणिक ग्रन्थ है ।

५. **कल्प**- सूत्र साहित्य को 'कल्प' की संज्ञा दी गई है। वेदों पर आधारित मानव की आदर्श जीवन पद्धति का निर्माण तथा मानव समाज की विवेक पूर्ण संरचना, वर्ण-विभाजन, वर्णों के कर्तव्यों का निर्धारण, जीवन के उत्थान में सहायक सोलह संस्कार, वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक विधि-विधान, राज्य संचालन जैसे अनेक लौकिक विषयों की विवेचना सूत्र या कल्प साहित्य में की गई है।

६. **ज्योतिष**- ब्रह्माण्डव्यापी ग्रह नक्षत्रों के अध्ययन की विद्या ज्योतिष है। वेदाध्ययन में इस शास्त्र की सहायता आवश्यक है। गणित ज्योतिष ही वैज्ञानिक शास्त्र हैं न कि फलित ज्योतिष।

सूत्र साहित्य का विभाजन इस प्रकार हुआ है-

१. **गृह्यसूत्र**- पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्य कर्मों तथा संस्कारों की विवेचना करने वाले ग्रन्थ गृह्यसूत्र कहलाते हैं। आश्वलायन, पारस्कर तथा गोभिल आदि गृह्यसूत्र प्रसिद्ध हैं।

२. **धर्मसूत्र**- वर्णाश्रम व्यवस्था तथा अन्य वैयक्तिक एवं समष्टिगत संस्थाओं का विचार धर्मसूत्रों में मिलता है।

३. **श्रौतसूत्र**- वेदाधारित वाजपेय राजसूय, अश्वमेध आदि यज्ञों का विधिविधान श्रौतसूत्रों का विषय है। यथा कात्यायन कृत श्रौतसूत्र।

४. **शुल्वसूत्र**- यज्ञकुण्डों की रचना तथा यज्ञवेदी-निर्माण का विषय इन ग्रन्थों में आया है। यह ज्यामिति से सम्बन्धित विद्या है।

संहिता और ब्राह्मण-ग्रन्थों की पृथक्ता-

सनातनी समुदाय की मान्यता है कि मन्त्र और ब्राह्मण एक हैं, इनका समुच्चय ही वेद- संज्ञा प्राप्त करता है। अत: मन्त्रों की भांति ब्राह्मणों को भी अपौरुषेय, ईश्वर प्रणीत मानना उचित है। दयानन्द सरस्वती का मत इससे भिन्न है। इन दोनों ग्रन्थों में व्याख्यात विषयों की तुलना बताती है कि ब्राह्मणों को संहिता भाग की व्याख्या कहना उपयुक्त है। जिस प्रकार किसी ग्रन्थ के भाष्य या टीका को मूल ग्रन्थ नहीं कहा जाता इसी प्रकार वेदों और उनकी व्याख्या के रूप में लिखे गये ब्राह्मणों को एक ही वेद नाम से पुकारना उचित नहीं है। दयानन्द सरस्वती ने दोनों की पृथक्ता में अनेक प्रमाण दिये हैं। जो उनके ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में देखे जा सकते हैं। दयानन्द का यह मत नया प्रतीत हो सकता है। तथापि उनके द्वारा स्वमत की पुष्टि में प्रस्तुत युक्तियों का सहज ही प्रत्याख्यान नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार कालिदास के मेघदूतादि मूल काव्यों को मल्लिनाथ कृत उनकी टीकाओं से भिन्न समझा जाता है उसी प्रकार संहिता भाग तथा ब्राह्मण साहित्य की पृथक्ता स्वत: सिद्ध है। संहिताएं अपौरुषेय हैं जबकि ब्राह्मण ऐतरेयादि ऋषियों द्वारा रचित हैं ।

'जीवन की सफलता वेदों के स्वाध्याय, सद्व्यवहार एवं आचरण में है'

–मनमोहन कुमार आर्य

ge eu'; bl dkj.k l gfd ge viu eu o cf) l fpUru o euu dj lR;klR; dk fu.k; dju lfgr lR; dk xg.k ,o vlR; dkR;kx dj ldr gl ok djr gA ;g dk;l lk"k o i{kh ;kfu d thokRek ugh dj ldrA blds dkj.k ;g gl fd lk"k o if{k;k vkfn d ikl u rks eu';k d leku cf) g vkj u gh mudk ikl ekuo "kjhj d tlk "kjhj g ftll og fopkj o fpUru& euu dj lR; dk fu.k; dj viu dek dk dj ldA vr% eu'; ;kfu e eu'; dk viuh cf) dh ;Fkk"kfDr mUufr dj mlll tk mfpr del o 0;ogkj fuf"pr gkrl g] mUgl gh djuk pkfg;A ik;% ykx ,lk djr Hkh g ijUr cgr l ykx dke] Øk/k] ykHk] bPNk] b';k o }'k vkfn d o"khHkr gkdj vdj.kh; del o 0;ogkj djr gA lkkj d Lokeh lo0;kid o lokUr;keh b"oj dh nf'V l ge thok dk dkbl "kHk o v"kHk del fNi ugh ikrk ftll thokRek ok eu'; dk viu lHkh dek dk tUe o tUekUrjk e Hkkx djuk o mudk ifj.kke Hkkxuk iMrk gA eu'; dk thou e tk l[k o nq[k feyr gl og mld orleku thou lfgr iolt Ue d vHkDr dek dk Qy gkrl gA iold r dek dk rk lHkh eu';k ok thokRekvk dk Hkkxuk gh iMrk g ijUr ge viu orleku o Hkfo"; d dek dk l/kkj vo"; dj ldr gA bld fy; ge

,d fo}ku iFk&in"kd x# o vkpk;l dh vko";drk gkrh gA oreku le; e ,l x# miyC/k Hkh gk ldr g ijUr bl mnn"; dh ifr ge ?kj cB on ,o ofnd lkfgR; dk Lok/;k; dj ijh dj ldr gA lf'V d vkjEHk l gh b"oj dk lk{kkRdkj fd; g, rFkk onk d eeK fo}ku _f'k;k u mifu'kn] n"ku rFkk euLefr vkfn xUFk fy[kdj gekj drO;k dk ge ck/k djk;k gA ge onk lfgr miyC/k leLr onkudy vk'k xUFkk dk v/;;u ifrfnu dN ?k.V vo"; djuk pkfg;A ,lk djr g, iki dek dk dju e gekjh iofRr ugh gkxh ftll gekj thou e n%[kk dh ek=k rk de gkxh gh] vkRek d "kHk dek d vkpj.k l l[kk e of) Hkh gkxhA "kkL=h; Kku o "kHkdek dk dju l gekjh vkRek dh mUufr gkxh ftll gekjk eu'; thou lQy gkxkA gekjk orleku] Hkfo'; ,o ijtUe lHkh ljf{kr gkx rFkk ge l[k o mUufr ikIr djku oky gkxA vr% thou dk lQy o mUur dju d fy; ge on o ofnd lkfgR; d v/;;u lfgr b"oj] vkRek rFkk lkkfjd fo'k;k ij fopkj o fpUru djr jguk pkfg;A bll gekjk

thou vlR; o vufpr dek dk dju l cp ldxk rFkk ge /ke d lk;k; “kHk dek dk lp; dj viu Hkfo’; dk l[kn ,o “kkfUr l i.k cuk ldxA

eu’; thou dh mUufr e onk d v/;;u o Kku dk lokifj egRo gkrk gA on dkb lk/kkj.k iLrd ugh gA ;g lf’V d vkjEHk e bl lf’V d jpf;rk lo0;kid ije”oj dk viuk Kku g tk m lu eu’;k d dY;k.k d fy; pkj _f’k;k vfXu] ok;] vkfnR; rFkk vfxjk dk fn;k FkkA blh Kku dk gekj ijorh _f’k;k o fo}kuk u ljf{kr j[kk tk vkt Hkh viu “k) o ;FkkFkLo:lk e “k) onkFk lfgr ge lyHk gA onk d “kh’k vkpk; _f’k n;kuUn u onk dh ijh{kk o ijEijkvk dk v/;;u dj ik;k Fkk fd on lc lR; fo|kvk dk iLrd g rFkk bldk v/;;u] v/;kiu] ipkj rFkk vkpj.k lc eu’;k dk ije /ke gA ;g ckr onk/;;u ,o fopkj dju l lR; fl) gkrh gA lR;kFkidk”k rFkk _XonkfnHkk’;Hkfedk e onk dk lR;Lo:lk iLrr fd;k x;k gA bl i<dj ikBd vk”oLr gk ldrk g fd onk dk eu’; d thou e lokifj egRo g vkj _f’k n;kuUn dh lHkh ekU;rk; onkudy ,o ije/ke onkpj.k d ikyu e ijd ,o lgk;d gA onk dk v/;;u dju okyk eu’; /keekx l P;r ugh gkrkA og /ke lp; dj tUe o tUekUrjk e l[kk dk ikIr djrk gA v”kHk de ugh djrk ft ll bud ifj.kke e gku oky n%[kk o elhcrk l og cpk jgrk gA gekjk oreku tUe viu iotUek d Kku o dek dk ifj.kke gA blh idkj l gekjk ijtUe Hkh bl tUe d dek o bll io d vHkDr dek dk ifj.kke gkxkA bl tUe e onk/;;u ,o lndek dk dju l eu’; bl tUe lfgr ijtUek e Hkh l[k ikIr djrk g rFkk v”kHk de u dju l bll feyu oky n%[kk l og cpk jgrk gA vr% ge onk/;;u dk ie[krk nuh pkfg; vkj ifrfnu ;FkkEHko dN le; onk dk Lok/;k; vo”; djuk pkfg;A

onk l vifjfpr eu’; Hkkfrd l[kk dh ikfIr dk gh eu’; thou dk mnn”; eku yr g vkj viuk ijk le; jkr&fnu /kukiktu o lEifRr dk vftr dju vkfn dk;k e yxk nr gA bll mUg “kkjhfjd l[k rk feyrk g ijUr ;g l[k /ke o “kHk dek dh ryuk e ikIr l[kk l fuEu dkfV dk gkrk gA onkudy b”ojkikluk] ;K] ijkidkj d dk; rFkk nku vkfn de dr0; dh Hkkouk l fd; tkr g ft ll eu’; bu dek e fylr ugh gkrkA bu on fofgr dek dk ifj.kke l[k gh gkrk g tcfd on Kku l jfgr de dju l eu’; vuk;k l o vutku e Hkh vud v”kHk de dj Mkyrk g ft ldk ifj.kke ml n%[k d :lk e Hkkxuk iMrk gA vr% Lok/;k; l onKku dk ikIr dj eu’;k dk onkudy “kHk dek dk djr g, /ku o lEifRr dk lp; djuk pkfg; o mldk R;kxiod Hkkx dju d lkFk mll vU; cU/kvk dk Hkh ykHk igpkuk pkfg;A bld fy; ijkidkj ,o nku vkfn dr0; l[k] mUufr o ;”k ikIr djkr gA vr% thou dk vYi o lhfer ek=k e Hkkfrd l[kk dh bPNk d lkFk onk/;;u rFkk on

fufn'V dr0;k dk Hkh viuh thou "kyh o fnup;k e lfEefyr djuk pkfg;A ,lk thou gh lrfyr thou gkrk g ftldk ifj.kke J;Ldj gkrk gA

eu'; on ,o ofnd lkfgR; dk v/;;u djrk g rk ml bl lf'V d Lokeh o lpkyd b"oj lfgr thokRek o lf'V dk ;FkkFk Kku ikIr gkrk gA ;g lf'V ml viu lk/; b"oj dk ikIr dju e ,d lk/ku d :Ik e Li'V irhr gkrh gA lf'V ek= l[k Hkkx d fy; ugh vfir R;kxiod thou dk fuokg djr g, vkRek e "kHk x.k] de o LoHkko dk/kkj.k dj ijekRek dk ikIr dju ok mldk lk{kkRdkj dju d fy; lk/ku :Ik e ge ikIr djkb xb gA gekjk "kjhj Hkh ek= l[kk dk Hkkx dju d fy; ugh cuk g vfir ;g Hkh gekjh vkRek dk b"oj rd igpku okyk ,d jFk g tk b"oj ikfIr dk lk/ku gA ge lk/; dk ikIr dju e lgk;d viu "kjhj dk Kku o ri l lk/kuk gkrk gA ;gh "kjhj dk lni;kx gkrk gA viu mnn"; b"oj ikfIr dk Hkykdj ek= /kukiktu djuk] lEifRr dk lp; djuk rFkk bfUn;k d l[k Hkkxu dk thou dk mnn"; eku yuk vfo|k o Hke l ;Dr lkp o fopkj/kkjk gA ge bl l cpuk g vkj on vkj lR;kFkidk"k l gh ij.kk ydj viu thou dh lokxh.k mUufr d fy; b"oj o vkRek dk Lej.k j[kr g, lk/kuk djuh gA ge ;g Kkr gkuk pkfg; fd _f'k n;kUn u lR;kFkidk"k mu ykxk d fy, cuk;k g tk onk dk v/;;u u dj onk d ik;% lHkh fl)kUrk o ekU;rkvk dk fgUnh Hkk'kk e l{ki e tku ldr gA b"oj o vkRek d ;FkkFk Kku dk ikIr gkdj ge b"oj dh mikluk ,o "kHkdek dk djr g, U;u ek=k e gh l[kk dk Hkkx djuk gekjk y{; gkuk pkfg;A bld fy; ge on vkfn xUFkk dk Lok/;k; djr g, lnKku l ;Dr jguk pkfg;A ;g eu'; thou dh mUufr d fy, vko";d ,o vfuok;gA

eu'; ok mldh vkRek vYiK lRrk gA og fcuk ofnd lkfgR; d lHkh fo'k;k dk lR; o ;FkkFk Kku ikIr ugh dj ldrhA bld fy, ml on o lnx#vk dh vko";drk gkrh gA on o mld lR;kFk gh oLrr% gekj lnx# gA onk/;;u l gh ge bl l lkj dk bld ;FkkFk:Ik e tkuu e leFk gkr gA onk l ge Kkr gkrk g fd b"oj o thokRek lfgr lf'V dk miknku dkj.k iÑfr vukfn o fuR; gA ge bl l lkj e vukfn dky l gA ge"kk jgxA dHkh gekjk uk"k o vHkko ugh gkxkA vrhr e Hkh ge tUe&ej.k e Ql jg g rFkk Hkfo'; e Hkh tUe o ej.k e vkc) jgxA gekjk tUe gekj dek d vk/kkj ij gkrk gA vr% ge dek ij /;ku nuk gkxkA bld fy; gh onKku lgk;d gkdj gekjk ekxn"ku djrk gA ge on ok onKku dk dHkh NkMuk ugh gA ;fn ge Lok/;k; djr jgx rk ge viu dr0;k o mld gku oky ifj.kkek dk Kku jgxk ftl l ge v"kHk dek l gku oky n%[kk o ckj ckj d tUe o ej.k ij fot; ikIr dj ldxA onk l ge viu thou dh mUufr d ;FkkFk o "kk"or mik;k b"ojkikluk] ;Kh; thou] vfXugk=

dk djuk rFkk brj lHkh dr0;k dk Kku Hkh gkrk gA vr% on dk thou e dHkh foLer ugh djuk pkfg;A

ofnd thou gh eu’; dk vk/;kfRed ,o Hkkfrd l[kk dh ikflr djkrk gA blfdk mnkgj.k gekj lHkh iot _f’k] efu] ;kxh] jke] Ñ’.k] n;kuUn vkfn egki#’k rFkk lHkh “kh’k ofnd fo}ku jg gA vr% ge viu iotk o egki#’kk dk vudj.k o vuljk.k djuk pkfg;A ,lk dju l gekjk thou fu”p; gh mUur ,o lQy gkxkA ge ;g Hkh tkuuk g fd onk d Lok/;k; l jfgr thou ,dkxh ,o eu’; dk cU/kuk e ck/ku okyk gkrk g ftlls ijtUek e n%[kk dh ikflr gkrh gA ;g jgL; Hkh ge onk ij vk/kkfjr lR;kFk idk”k vkfn xUFkk d v/;;u l Li’V gk tkrk gA

onk/;;u dj onk d vu#i vkpj.k djuk gh eu’; dk dr0;] /ke ,o thou dh lQyrk g ftle eu’; dh vkRek dh mUufr gkus l J’B eu’; ;kfu o mRre ifjo”k e tUe ikIr gkrk g vkj ek{k dk ikIr dj lcl cM l[k o y{; dh ikflr gkrh gA vr% ge ifrfnu ikr% o lk;a b”oj dk /;ku o Lrfr&ikFkuk& mikluk djr g, viuh vkRek dh mUufr rFkk thou dh lQyrk ij fopkj vo”; djuk pkfg;A ,lk dju l ijekRek l ge lh/kk ekxn”ku ikIr gkxk vkj ge Lok/;k; o lnkpj.k djr g, n%[kk l cpx vkj /ke dk lp; l eu’; thou dh mRre xfr ek{k dk ikIr dj thou dk lQy dj ldxA

vk…e “keA

ofnd lk/ku vkJe rikou] ngjknu e /;ku ;kx ,o n'kuk d iBu&ikBu dk fujUrj pyu okyk dk;Øe

ofnd lk/ku vkJe rikou] ngjknu }kjk vkpk; iŒ ljr jke 'kek th d ekxn'ku e mijkDr /;ku ;kx] ;kxklu] ;K ,o ;kx n'ku vkfn d iBu&ikBu dk 15 flrEcj 2023 l fujUrj pyu okyk dk;Øe py;k tk;xkA bPNd Hkkb&cfgu fuEu ekckby uEcjk ij #Œ 1000@& QR Code d ek/;e l tek djkdj viuk jftLV'ku djk ldr gA tk cU/k vkJe e fuokl djx mUg ikr% uk'rk] nkigj dk Hkkstu] jkf= Hkkstu rFkk vkokl d en e 300@& #Œ ifrfnu d fglkc l vkjEHk e tek djuk gkxkA Ñi;k ;kxn'ku dh d{kk e lfEefyr gku d fy, ;kxn”ku 0;kl Hkk"; viu lkFk vo'; yk;A

lEid l=% ieidk'k 'kek] lfpo& ekŒuŒ 9412051586
iŒ ljr jke 'kek] ijkfgr& ekŒuŒ 8279557395

प्रेरणा की स्रोत – पुत्रवधु

io lB fcjyk th dh dgkuh & lB fcjyk th ?kj e [kkuk [kk jg Fk] bru e ,d egkRek u njokt ij vkokt yxkb & fHk{kk nfgA rc i=o/k u dgk & ;gk rk ckl h [kk jg gA ; ludj egkRek py x,A lB u dgk & ; jkVh lCt h D;k vHkh ugh cukbl\ jkr dh g D;k\ i=o/k ckyh rk th cukb gA rk reu D;k dgk egkRek l fd ckl h [kk jg g\ i=o/k u dgk & blds mUkj lk/k egkRek gh nxA lk/k cky & lB! [kkuk rk rk tk g] exj fiNy dek dk Qy g tk vki [kk jg gA vc dk ugh gA blfy, ckl h [kk jg gA lB d ckr cB xbA mlu ukdj l dgk & re tkdj ml xknke l pu y vkvk dkBk dk >kMdjA ukdj >kMdj puk y vk;kA i=o/k u puk lkQdj mldk ihl nlj fnu jkVh cukb vkj lB dh Fkkyh e j[k nhA lB u jkVh rkMh rk mle cnc vkbA lB ckyk jkVh dlh g\ i=o/k ckyh & vUu dk ilkn g] ilkn rk lcdk lcl igy [kkuk pkfg,A lB ckyk & ble cnc vkrh gA i=o/k ckyh&tk vki nku djkx] olk gh Hkxoku vkidk nxk vkj gtkjk xuk nxk] fQj dl djkx\ rc lB d vUnj d lLdkj tkx vkj rc l nku i.; dh i.; /kkjk cgu yxhA vkt ge tgk Hkh tk, ogk /ke'kkyk] efUnj] /kekFk dk; py jg gA ge lcd ?kjk e ,lh lLdkjorh ekrk] iRuh] i=o/k] cVh Hkh lLdkjoku ?kj e gkA nku] i.;] gou] Hkxor Hktu gk] rHkh ?kj&ifjokj o jk"V dk dY;k.k gkxkA l[k 'kkfUr dh o"kk gkxhA

AA vk३e 'kkfUr AA

सर्व श्री दीप चन्द विजय कुमार,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9837444469

दीप कोल्ड स्टोर,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9457438575

दीप मार्बल्स,

कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9412468691

vk3e

वैदिक साधन आश्रम

तपोवन, नालापानी, देहरादून

द्वारा

egf"k n;kuUn ljLorh dh

200वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित

'kjnRlo

(बुधवार, 4 अक्टूबर 2023 से

रविवार, 8 अक्टूबर 2023 तक)

में आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक

egf"k n;kuUn ljLorh

(1825-1883)

आश्रम सोसाइटी के सदस्यगण : विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, प्रदीप दत्ता, अजय पाल, पुष्पा गुसाईं, भुवनेश अरोड़ा, निधि कपूर

कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी : रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया, श्रीमती कान्ता काम्बोज

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com Web : www.vaidicsadhanashramdehradun.com

शरदुत्सव, योग साधना एवं सामवेद यज्ञ

तदनुसार बुधवार 4 अक्टूबर से रविवार 8 अक्टूबर 2023 तक मनाया जायेगा।

;kx lk/kuk fun'kd % Lokeh fpÙk'ojkuUn ljLorh th ,o lk/oh iKk th

;K dh cãk % vkpk;k MkŒ fi;onk onHkkjrh

ofnd fo}ku % iŒ me'k pUæ dyJ"B th] Lokeh ;kx'ojkuUn ljLorh th] MkŒ /kUut; th] MkŒ l[knk lkydh th] vkpk;k MkŒ vUui.kk th] iŒ ljr jke 'kek th] iŒ on ol 'kkL=h th] Jherh ljUæ vjkMk th] Jh egUæ efu th] Jh vut 'kkL=h th

on ikB % x#dy uthckckn dh cãpkfjf.k;k }kjk

;K rFkk vU; dk;Øek dk lpkyd % ifMr ljrjke 'kek th] Jh 'ky'k efu lR;kFkh th

Hktukin'kd % iŒ txr oek th] tkyU/kj] egkRek vk;efu th ,o Jherh ehuk{kh iokj th

c/kokj 4 vDVcj l jfookj 8 vDVcj 2023 rd ifrfnu

;kx lk/kuk % ikr% 4-00 l 6-00 ct rd	;K ,o l/;k % ikr% 3-00 l 5-30 ct rd
l/;k ,o ;K % ikr% 6-30 l 9-00 ct rd	Hktu ,o iopu % jkf= 07-00 l 09-00 ct rd
Hktu ,o ippu % ikr% 10-00 l 12-00 ct rd	

c/kokj fnukd 4 vDVcj 2023

/otkjkg.k % ikr% 9-00 ct& Jh me'k 'kek ^dkÅ* th d djdeyk l

;K d ;teku % Jh fot; lpnok ,o ifjokj

dk;Øe d v/;{k % Jh pUæxlr foØe th

Hktu % iŒ txr oek th] egkRek vk;efu th

iopu fo"k; ikr% % b'oj dk lPpk Lo:i

oäk ikr% l= % vkpk;k MkŒ fi;onk onHkkjrh] i- ljr jke 'kek th

iopu fo"k; lk; % egf"k n;kuUn vkj vk;l ekt dh fe'kujh ;ktuk

oäk lk;dky l= % iŒ me'k pUæ dyJ"B th] Jh vut 'kkL=h th

;|ok lEesyu & x|:okj fnukd 5 vDVcj 2023

dk;Øe d v/;{k % MkŒ Ñ".k dkUr ofnd 'kkL=h
Hkktu % iŒ txr oek th
iopu fo"k; ikr% % ;okvk dk ofnd /ke dh vkj vkdf"kr dju d mik;
oäk ikr% l= % lk/oh iKk th] Lokeh ;kx'ojkuUn th] vkpk; MkŒ /kUut; th] vkpk;k MkŒ fi;onk onHkkjrh ,o MkO vUui.kk th
iopu fo"k; lk; % jk"V j{kk e ;|okvk dh Hkfedk
oäk lk;dky l= % iŒ me'k pUæ dyJ"B th] Jh vut 'kkL=h th

efgyk lEesyu & 'k|Øokj fnukd 6 vDVcj 2023

e[; vfrfFk % leu ukfx;k
dk;Øe dh v/;{k % lk/oh iKk th
Hkktu % Jherh ehuk{kh iokj th ,o æk.kLFkyh vk"k dU;k x:dy dh cãpkfjf.k;k] iŒ txr oek th] x#dy uthckckn dh cãpkfjf.k;k
iopu fo"k; ikr% % ofnd ukfj;k vkj orZeku ifjo'k
oäk ikr% l= % vkpk;k MkŒ fi;onk onHkkjrh] vkpk;k MkŒ vUui.kk th] MkŒ l[knk lkydh th
iopu fo"k; lk; % /ke dh okLrfod fLFkfr vkj ererkUrj
oäk lk;dky l= % iŒ me'k pUæ dyJ"B th] iŒ ljr jke 'kek th

;kx ,o mikluk lEesyu & 'kfuokj fnukd 7 vDVcj 2023

dk;Øe d v/;{k % Lokeh fpÙk'ojkuUn ljLorh th
Hkktu % iŒ txr oek th
iopu fo"k; ikr% % ofnd v"Bkx ;kx ,o mikluk
oäk ikr% l= % vkpk;k MkŒ fi;onk onHkkjrh] iŒ me'k pUæ dyJ"B th] lk/oh iKk th] MkŒ vUui.kk th
lk;dky Hktu l/;k % iŒ txr oek th ,o Jherh ehuk{kh iokj th

ukV% 'kfuokj dk ikr%dkyhu ;K ,o Hktu iopu d dk;Øe rikHkfe ¼igkMh ij½ vk;kftr fd;s tk;xA

jfookj fnukd 8 vDVcj 2023

lekiu lekjkg	%	ikr% 10-00 l 1-00 c t rd
e[; vfrfFk	%	b nhid xk;y th] eEcb
lHkk/;{k	%	Jh fot ; dekj vk; th
dk;Øe lpkyd	%	Jh 'ky"k efu lR;kFkh th
vfrfFk;k dk Lokxr	%	bŒ ie idk'k 'kek ¼lfpo rikou vkJe½
Hktu	%	iŒ txr oek th] egkRek vk;efu th
iopu fo"k;	%	egf"k n;kuUn ljLorh th dh nf"V e fo'o 'kkfUr
oä	%	iŒ me'k pUæ dyJ"B] vkpk;k MkŒ fi;onk onHkkjrh] Lokeh fpÙk'ojkuUn th] lk/oh iKk th] MkŒ vUui.kk th] Jh vut 'kkL=h th
lEck/ku	%	vfrfFk;k }kjk lEck/ku
/kU;okn Kkiu	%	vkJe d v/;{k Jh fot ; dekj vk; th }kjk /kU;okn Kkiu
_f"kyxj	%	lekiu lekjkg d mijkUr _f"kyxj dh 0;oLFkk

vkef=r ofnd fo}ku ,o vfrfFkx.k

MkŒ uonhi th] MkŒ Ñ".kdkUr ofnd 'kkL=h th] Jh euekgu vk;l th] Jh ,l-,l- oek th
Jh xkfoUn flg Hk.Mkjh th] Jh n;kÑ".k dkMiky th] Jh vkeidk'k efyd th] Jh l/khj xyykVh th]
Jh jktdekj Hk.Mkjh th] Jh egkohj flg th] Jh vt; R;kxh th] Jh /keiky 'kek th]
Jh rhjFk ddjtk th] Jh lt; tu th] Jh idt R;kxh th] Jh jkeiky jkfgyk th]
Jh vjfoUn 'kek th] Jh n;kuUn frokjh th] MkŒ ctiky vk;l th] Jh ujUæ lkguh th]
Jh vkeidk'k egUæ th] Jherh dkUrk dkEckt th] Jh KkupUn xlrk th] Jh Hkxoku flg th]
Jh 'k=?ku dekj ek;l th] Jh thrUæ flg rkej th] Jh efgiky flg th] Jh je'k Hkkjrh th]
Jh mEen flg fo'kkjn th] Jh j.kthr jk; dij th] Jherh Å"kk th] MkŒ fo'ofe= 'kkL=h th]
Jh vkeidk'k vxoky th] Jh ekuiky flg th] Jh fnu'k vk;l th] Jh gkde flg th]
Jherh i"ik xlkb] Jh on idk'k /kheku th] Jh inhi nÙk th] Jh lR;iky vk;l th]
Jh dlj flg th] Jh jru flg th] Jh efgiky flg R;kxh th] Jh jkeckc lluh th]
Jherh lfork vxoky th] Jh ctt'k 'kek th] Jh pUæxlr foØe th] Jh l/kk'k vxoky th]
Jh ;kx'k HkkfV;k th] Jh d-d- vxoky th] Jh ;'kohj vk;l th
,o lHkh vk;lektk d i/kku] e=h ,o lnL;x.k

निवेदक

विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, प्रदीप दत्ता, अजय पाल, पुष्पा गुसाईं, निधि कपूर, रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, महेन्द्र सिंह चौहान, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया, श्रीमती कान्ता काम्बोज

एवं समस्त सदस्य वैदिक साधन आश्रम सोसायटी, देहरादून।

ब्रह्मविद्या और उसके भेद

श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

cãfo|k d nk Hkn gkr gA ,d ijk vkj nljh vijkA ; nkuk fo|k, onk d gh vUrxr gA ijk fo|k vk/;kfRed txr l lEcfU/kr gA ikrty ;kx'kkL= d vulkj bl fo|k l ik.k l ydj ije'oj i;Ur dk Kku ikIr fd;k tkrk gA bu nkuk dk dUæ ^pru* gA pru l gh lkj tM vkj tho dk Kku gkrk gA vr% iÑfr e pru mlh idkj 0;kid g ftl idkj vfXu fo'o d inkFkk e 0;kIr gA vfXu dh mRifÙk ogh gkrh g tgk vfXu dk mRiUu dju okyh fØ;k dh tkrh gA Hkn doy bruk gh g fd vfXu d ijek.k gkr g vkj pru d dkb ijek.k ugh gkr] blfy, og vfXu d ijek.k e Hkh 0;kid g vkj og bruk l{e g fd ml dkb idM ugh ldrk fdUr mlh d }kjk leLr lf'V idMh tkrh gA

;fn iÑfr e KkuLo:i dkb vn'; 'kfDr dk; ugh djrh rk vkfn lf'V e mnfHkt d igy gh eu"; dh mRifÙk gk tkrh vkj fcuk nX/k 0;oLFkk d gh xk viu cNM dk tUe n nrhA fdUr ;g 0;oLFkk dgh Hkh n[ku dk ugh feyxh fd HkkX; l io gh HkkDrk dk tUe gk x;k gkA drk ;k jpf;rk dk Kku v/kjk ugh gA og fdl h dk mRiUu dju l igy mld mRiUu dju vkj ikyu&ik"k.k dju oky miknkuk dk fuek.k vo'; gh djrk gA

mRifÙk dk jgL; cMk gh vnHkr gA lf'V dh ikjfEHkd voLFkk e rjg&rjg d mRikr gkr gA ; mRikr djkMk o"k rd fo|eku jgr gA i'pkr tc leæ] ok; vkfn e 'khryrk dk iknHkko gkrk g rHkh mnfHkt vkfn ikf.k;k dk fuek.k gkrk gA lk/kkj.k nf"V l mRifÙk dk foKku le> e ugh vkrkA cã e ftru cãk.M fo|eku g mudh jpukvk dk foKku vuUr g] ftudh xo"k.kk tgk rd igprh g o ogh rd mudh jpukvk l voxr gk ikr gA

gekj lkj txr e doy ,d l; dk gh nf[k,A mld vUnj ftru vfXu f'k[kk d dk'k mRiUu gkdj u"V gkr g] fojkV d iHkko l iu% mru gh u;&u; vfXu f'k[kk d dk'k mle mRiUu gk tkr gA

l; dk tBj nk djkM lÙkj yk[k fMxh rki l ijek.k pYyh l tyrk gA l; vfXu dk fi.M ugh] fdUr mle ToyUr xlk dk vikj dk'k g vkj mlh dk lenk; l; dk vfLrRoe; :i gA mld ,d&,d dk'k dN gh feuV d fy, thfor jgr g vkj iu% ogk uohu dk'kk dh mRifÙk gk tkrh gA mRifÙk d lkFk tc mlh vfXu f'k[kk d ijek.k mNydj ckgj iMr g rc dN feuV d ckn ogk nlj ijek.k vkdj ml iuthfor dj nr gA bu oKkfud ifØ;k vk dk u fojke g vkj u fojfr gh gA

Jh ohjUæ dekj Lukrd] on f'kjkef.k vkxjk u vk;fe= 14 tykb] 1963 d foKku ,o vkfLrdokn uked 'kh"kd y[k e fy[kk g fd foKku d oxhÑr fu;ek e fu;Urk dh lÙkk dk ekuu oky fopkj/kkjk vkfLrdrk g& rkRi; ;g g fd foKku u vulU/kku vkj vkfo"dkjk d vk/kkj ij ftu fu;ek dk fu/kkj.k fd;k g o lc Lor% lpkfyr gk jg g] ,l ekuuk cf)ghurk dk gh ifjp; nuk

gA foKku tc iR;d ?kVuk dk fo'y"k.k djd ml vlEc) u crkdj lEc)] l0;ofLFkr vkj fu;fer crkrk g rc i'u ;g gkrk g fd bu fu;ek dk dku lpkyu dj jgk gA bl dku d mÙkj e gh vkfLrdrk fufgr gA

cM&cM foKku&oÙkkvk u Hkh ;g Lohdkj fd;k g fd ;g lf"V fu;fer vo'; g ijUr D;k g] ,lk fdl dkj.k l gk jgk g& ;g tkuu e ge vleFk gA foKku&fonk dh ;g fopkj/kkjk fu;ek d fu;Urk dk&vkfLrdrk dk&fu"k/k ugh djrh] vfir mud ifr viuh vufHkKrk ek= idV djr g, mldh [kkt d fy, ij.kk nrh gA l{ki e ;g dgk tk ldrk g fd bl idkj foKku vkj vkfLrdrk ijLij fojk/kh ugh gA vifr foKku fu;ek dh [kkt djrk g vkj vkfLrdrk mu fu;ek dk fu;Urk d lkFk lEcU/k [kktrh gA nkuk ,d&nlj d ijd gA ,d d fcuk nljk fu"Qy vkj fu"i;ktu gk tkrk gA

Hkkfrdoknh&ijek.k vkj pru dHkh ugh mRiUu dj ldr vkj u dHkh mu æ0;k dk cuk ldr g ftu æ0;k dk vkfn ey ije'oj Fkk] g vkj jgxkA fodkloknh cuh gb ikÑfrd oLrvk l gh cur vkj cukr g] ijUr bldk rkRi; ;g ugh fd o fojkV d Åij Hkh viuk iHkRo LFkkfir dj ldA tho vYiK gA og loK dh dkfV e dHkh ugh tk ldrk gA ftl idkj eu"; fufer Ñf=e eu"; ekuo ij vf/kdkj ugh dj ldrk] mlh idkj b'oj fufer eu"; Hkh b'oj vFkkr viu fuekrk d Åij fu;U=.k ugh dj ldrkA oKkfud tu ftl pruk d vk/kkj ij vulU/kku dk; dj jg g mlh pruk dk fu;U=.k djuk viu dU/kk ij Lo; p<u d ln'k gh gA

i'u& ijk vkj vijk e D;k Hkn g\

mÙkj& bl Hkn dk bl idkj idV fd;k tk ldrk g fd tl gekj lkeu ,d dyki.k vkHK"k.k tc mifLFkr gkrk g rc dN 0;fDr;k d gn; e LoHkkor% i'u mBrk g fd ;g vkHK"k.k dc cuk] dl cuk vkj fdlfy, cuk bR;kfn tkuu d fy, cfge[kh gkdj vxlj gk tkr g vkj Øe'k mld iR;d Hkkx dk vulU/kku dju yxr gA lkFk gh dN ,l Hkh 0;fDr gkr g fd mudk /;ku bl vkj vkdf"kr gkrk g fd bl vkHK"k.k dk cuku okyk dku gA cl bl tkuu d fy, mudk vUre[kh i;Ru gk tkrk gA bl idkj cã dh nkuk fo|k, lR; g D;kfd nkuk dk ekx ogh l mRiUu gkrk gA ,d fpUru ekx cã dh vkj y tkrk g vkj nljk mld cã.M rd gh tkrk gA

i'u% lf"V l ydj vkt i;Ur dkb Hkh pUæykd dk ugh tk ldk vkj vc tku yx gA D;k\

mÙkj% ofnd oKkfudk u vkt l yk[kk& djkMk o"k io ijk fo|k dh mUufr ml h idkj dh Fkh ftl idkj vkt d Hkkfrd oKkfudk u vijk fo|k e mUufr dh gA ofnd _f"k;k dk pUækfn ykdk dk Kku cgr mPp Fkk vkj o ykx lekf/k }kjk pkg ftl fdlh oLr dk ;k ykd&ykdkUrj dk Kku&foKku] fooj.k vkfn i.k :i l Kkr dj yr gA mudk bu jkdVk ;k foekuk dh Hkh vko';drk ugh iMrh FkhA rFkkfi o bll vufHkK Hkh ugh Fk vkj o lHkh idkj d vUrfj{k ;kuk d jgL;] mud fuek.k vkfn d Kkrk Fk tlk fd gekj ikphu

foeku fuek.k d xUFkk l Li"V idV gkrk gA on e Hkh foekuk dk Li"V o.ku g ghA

i'u%& pUækfn ykdk e tku d dkj.k /kkfed xUFkk vkj ekU;rkvk ij dlk iHkko iMxk\

mÙkj%& onkfn lR;'kkL=k ij cgr vPNk iHkko iMxkA fdUr on&fojk/kh erk dk vU/kfo'okl cUn gk tk;xkA rkRi; ;g g fd voKkfud /kkfed xUFkk dh dkb ifr"Bk ugh jg ldxhA Hkkjr e tu er vkj ikjkf.kd er lcl igy u"V gkx rFkk ;jki e bLyke vkj fØf'p;u erk dh lekfIr gkxhA rRi'pkr 'k"k lc er erkUrj Hkh Lor% u"V gk tkoxA bl idkj llkj e mlh lR;/ke dh LFkkiuk d fy, {k= fufer gk ldxk tk lc lR; fo|kvk d vkj inkFkk dh fo|kvk }kjk ,d ek= lcd vkfney lkr ije'oj dh ikfIr d fy, vUre[kh [kkt dk viuk ie[k /;; cuk;xkA

i'u%& vefjdk d rhu vUrfj{k ;k=h fnŒ 21&7&1969 dk pUæykd x; vkj mUgku ogk Hkk tu d le; efx;k dk ekl [kk;kA bu ekIkgkfj;k ij dnjr dh n;k gb vkj o ogk l 50 ik.M feVVh vkj iRFkjk d ueu y vk;A

mÙkj%& ftl idkj Hkkj d i;Ru dk rkRi; xykc d dkVk l ugh mld e/k l gkrk g mlh idkj dnjr dh n;k ekIkgkfjk; ij mud ekIkgkj d dkj.k ugh vfir mud oKkfud ifjJe ij gkrh g vkj gb Hkh gA ,d b'oj dk HkDr ,dkUr e cBdj ;fn pkg fd fcuk i;Ru d gh Hkk tu r;kj gkdj Lo; e[k e pyk tko rk ,lk dHkh ugh gk ldrkA

lf"V e fo/kkrk dh ,lh lR; 0;oLFkk g fd Kku dk cht lcd vUnj n j[kk g& pkg og fdlh Hkh iÑfr dk gkA xo"k.kk : ih ?k"k.k pkg tgk Hkh gkxk Kku : ih vfXu ogk idV gkxh ghA fdUr ;g Hkh /ko lR; g fd ekIkgkjh ;kxkH;kl ekx d vf/kdkjh dHkh ugh gk ldr] D;kfd ekl eu dk reke; vkj foyklh cuk nrk g vkj ijekRek dk ikIr dju d fy, eu dk lrkx.kh rFkk l;eh cukuk vko';d gA ;kx dk ekx jkdVk dk ugh] ik.kk;ke dk g] tgk iR;kgkj] /kkj.kk] /;ku vkj lekf/k l gh igpk tkrk gA

i'u%& D;k Hkkfrd foKku d }kjk fo'o e 'kkfUr gk ldrh g\

mÙkj%& Hkkfrdokfn;k dk ,lk gh fo'okl g fd ge pUækfn ykdk l dN ikIr djd fo'o ij viuh J"Brk] cy ,o iHkRo LFkkfir djd neu dk lkeF; miyC/k dj cká 'kkfUr dh LFkkiuk dj nxA ijUr ;g HkkUr /kkj.kk gA ykd& ykdkUrjk e tku l doy u;h tkudkjh gh ikIr gkxhA mll fo'o e gk jg mRikrk dk neu ugh gkxkA u rk cHkf{kr iV dh Tokyk gh fdlh idkj 'kkUr gk ldxh vkj u lcdh Hkkxk dh r".kk gh fdlh idkj 'kkUr gk ldxhA oj dh vfXu l 'kkfUr dh 'khryrk dHkh idV ugh gk ldrhA bl cãk.M e dgh ver dk ?kV ;k 'kkfUr dh l/kk iokfgr ugh gk jgh ftl ykdj fiyku l ;k yxku l ekuo txr vej gk tk;xk vkj veu l lc jg ldxA vkt rd lkbUl dk dkb Hkh vkfo"dkj fo'o dk 'kkfUr vkj lnkpkj dh vkj ugh ekM ldkA ekuo dh cf) fo'o dh ,d d{kk l nljh d{kk rFkk ,d x#Rokd"k.k lhek l nljh x#Rokd"k.k lhek dk yk?kkrh tk jgh g ijUr lnkpkj vkj ekuork l mruh gh nj Hkh gkrh tk jgh gA Hkkfrdfonk dk ;g nkok 0;Fk g fd ge mUgh Hkkfrd lk/kuk l 'kkfUr ikIr dj yxA 'kkfUr rk vk/;kfRed

txr dh ,d ojn foHkfr gA lkfRod eu dk ,d egku ilkn gA vkuUn vkj rflr dk ,d l[kn lkekT; gA ml rk vk/;kfRed lk/kuk }kjk gh ikIr fd;k tk ldrk gA

;fn fo'o onk dh vkj vxlj gku yx tko rk mldh gj idkj dh leL;kvk dk lek/kku 'kkfUri.k ekx l gk ldrk g D;kfd leL;kvk dk lek/kku onk e fo|eku gA v'kkfUr dk mRiUu dju okyk eu"; g vkj og gh ml 'kkfUr dh vkj ekM ldrk gA bl foKku d ;x e vkt iR;d eu"; dk vuHko dju dh vko';drk g fd fo'o 'kkfUr dh LFkkiuk fdl idkj gk ldrh gA

gekj fopkj e rk tc rd vudrk] vHkko vkj lhek fookn dk l?k"k fo|eku jgxk rc rd 'kkfUr dh LFkkiuk lHko ugha 'kkfUr dk ,d gh jkLrk gA ;fn fdlh Hkh {k= e vU;k; u dju dk n< ldYi y fy;k tk; rHkh fo'o e lPph 'kkfUr LFkkfir gk ldrh g vkj mll lcdk l[k rFkk lUrk"k ikIr gk ldrk gA

;gk rd cãfo|k d ckj e tk vkykpuk gb mll ;gh fu"d"k fudyrk g fd ijk vkj vijk]/ke vkj foKku ,d nlj d lk/kd g]ck/kd ugha

ge lcdh çj.kk i#"k ;kxhjkt Jh—".k vkj e;knk i#"kksÙke Jh jkepUæ th ;K djrh FkA vkvk ge lc Hkh mudk vuqlj.k djA

/;ku jg fof/kiod fd;k x;k ;K gh ykHkdkjh gkrk gA ;fn ;K e /kh] lfe/kk ¼ydMh½ vkj lkexh dk vuikr Bhd u gk rk ykHk ugh gkxk] gkfu dh Hkh lEHkkouk g] D;kfd ;K ,d oKkfud çfØ;k gA vr% ge lc i;koj.k 'kf) d fy, fof/kiod ;K vo'; djA

1- ;K dju@djoku d fy, ijkfgr th dh lok, lHkh vk;lekt efUnjk e miyC/k gA çR;d vk;lekt e nfud ;K gkrk gA lkIrkfgd ;K çfr jfookj çkr% 7%30 l 9%30 ct rd vk;kftr gkrk g vki pkg rk ble Hkh lfEefyr gk ldr gA
2- gou lkexh] lfe/kk] ;K ik=] vkfn leLr lkexh vk;lekt efUnjk e miyC/k gA
3- viu fudVorh vk;lekt dh fLFkfr tkuu d fy, Arya Locator ekckby ,li Mkmuyk M djA
4- vki gou dju d fy, Havan ekckby ,li Hkh Mkmuyk M djd dgh Hkh 10] 20] 30 feuV dk ;K dj ldr gA

ftl çdkj iVky vkfn tydj ok; çnf"kr djr g mlh çdkj lxfUkr lkexh vkj ?kh vkfn d tyu l ok; 'k) gkrh gA vr% viu ?kj e jktkuk ;K&gou dj&vk;lekt dk vkil foue fuonu gA

i;koj.k 'kf) d fy, vk;lekt —rldYi gA ;K gh i;koj.k 'kf) dk ,dek= mik; gA ;g lpuk vk;lekt dh vkj d i;koj.k 'kf) gr tufgr e tkjh fd;k x;k gA

;K d.M&;K ik=] gou lkexh] ;K&gou ij fo'k"k lkfgR; vkfn çkIr dju d fy, ofnd lk/ku vkJe rikou] ukykikuh] ngjknu l lEid djA

''यज्ञ क्या होता है और कैसे किया जाता है?''

-मनमोहन कुमार आर्य

;K loJ'B dk; ok de dk dgr gA vkt dy ;K "kCn vfXugk=] gou ok no;K d fy, :< gk x;k gA vr% igy vfXugk= ok no;K ij fopkj djr gA vfXugk= e i;Dr vfXu "kCn loKkr gA gk= og ifØ;k g ft le vfXu e vkgr fd; tku oky pkj idkj d n0;k dh vkgfr;k nh tkrh gA ;g pkj idkj d n0; g& xk/kr o dlj] dLrjh vkfn lxfU/kr inkFk] fe'V inkFk "kDdj vkfn] "k'd vUu] Qy o eo vkfn rFkk vk'kf/k;k ok ouLifr;k tk LokLF;o/kd gkrh gA vfXugk= dk e[; i;ktu bu lHkh inkFkk dk vfXu dh lgk;rk l l{ekfrl{e cukdj ml ok;e.My o lnj vkdk"k e Qyk;k tkrk gA ge lHkh tkur g fd tc dkb oLr tyrh g rk og l{e ijek.kvk e ifjofrr gk tkrh gA ijek.k gYd gkr g vr% og ok; e.My e lo= ok nj&nj rd Qy tkr gA ok; e.My e Qyu l mudk ok; ij ykHkin iHkko gkrk gA ft l idkj nxU/k;Dr ok; LokLF; d fy, gkfuin o eu d fy, vfi; gkrh g ml h idkj l xk?kr o dlj] dLrjh vkfn ukuk idkj d lxfU/kr n0;k d tyu l ok; dk nxU/k nj gkdj og lxfU/kr] LokLF;in o jkxuk"kd gk tkrh gA bl ;K d ifj.kkeLo:lk ;K l io dh ok; d x.kk e of) gkdj og LokLF;o/kd] jkxfuokjd] o'kkty dk "k) dju okyh] in'k.k fuokjd] o'kk ty ij vkfJr vUu o ouLifr;k dk LokLF;in dju] ;gk rd dh ;K o ;K&ok; nkuk vPNh lUrkuk dk tUe nu o mue lkfRod fopkj mRiUu dju e Hkh lgk;d gkrh gA

vfXugk= ;K dju d fy, ge ?kj e ,d ;Kd.M ok goud.M dk i;kx djr g tk ryh e NkVk o Åij dh vkj cMk o [ky e[k okyk gkrk gA ;g ijk ;K d.M Vhu] ykg o rkEc dk cuk gkrk gA Hkfe [kkn dj Hkh ;K d.M cuk;k tk ldrk gA vke] ihiy] xXxy] dij o iyk"k vkfn vud idkj d LokLF; o i;koj.k d fgrdj dk'Bk dh lfe/kkvk dk ;K d.M d vkdkj e dkV dj mUg ;Kd.M e j[kk tkrk gA dij dk ;K e i;Dr ?krkgfr okyh pEep e j[kdj ml nhid d }kjk inhlr fd;k tkrk gA bl ifØ;k dk djr g, oneU= dk ckydj vfXu dk vk/kku ;Kd.M d chp lfe/kkvk e fd;k tkrk gA tc vfXu iTtofyr gk tkrh g rk ;K d fo/kku d vulkj ifjokj dk ,d o vf/kd lnL; ?kr dh vkj dN gou lkexh ok lkdY; ft ldk o.ku Åij fd;k x;k g] dk yxHkx ikp&ikp xke ;k dN vf/kd ek=k e ydj ml dh vkgfr;k on eU=k dk ckydj ;K dh vfXu e Mkyh tkrh g ft ll vfXu e iM dj og vkgfr;k i.kr;k tydj o l{e gkdj ok;e.My e Qy tk;A ftu eU=k dk "k) mPpkfjr dj vkgfr;k nh tkrh g] mud vUr e Lokgk ckyk tkrk gA eU= ckyu dk i;ktu ;g g fd bll ;K dju d ykHk ;teku ok ;KdRrk dk fofnr gk tk; vkj lkFk gh mu eU=k d d.BLFk gk tku l mudh j{kk o lj{kk gk ldA bl idkj U;u l U;u ifrfnu ikr% o lk; lkyg&lkyg o vf/kd vkgfr;k nu dk fo/kku gekj iotk o _f'k;k u fd;k gA bl idkj l ;K vfXugk= dju e ek= 10 l 15 ;k vf/kdre 20 feuV dk le; yxrk gA bl ifØ;k l ok;e.My "k) gk tkrk gA ;K dh xeh l ?kj dk ok; gYdk gkdj Åij o f[kMfd;k&jk"kunkuk l ckgj pyk tkrk g vkj ckgj dk "k) o fgrdj ok;

?kj d vUnj io"k djrk gA bll ?kj e jgu oky lHkh lnL;k dk LokLF; vPNk ok fujkx jgrk gA ifjokj d fdlh Hkh lnL; dk jkx ugh gkr vkj ;fn fdlh dkj.k l gk Hkh tk; rk vYi ek=k e mipkj dju l og "kh?k Bhd gk tkr gA ?kr ,o ;K lkexh d vud inkFk fdVk.kuk"kd Hkh gA ;K dju l ty] ok; vkfn e o ?kj e ;=&r= tk l{e gkfudkjd fdVk.k fNi gkr g] og Hkh "k) ;Kok; d iHkko l u'V gk tkr gA "k) ok; feyu l eu';k dk LokLF; vPNk gkrk g o mud "kjhj cyoku] jkxeDr o LoLFk gkr gA ;K dju d vud vn"; ykHk Hkh gkr g tk ;K eoneU=k d }kjk dh tku okyh ikFkukvk d vu:lk ikIr gkr gA _f'k;k u viuh xo'k.kk o vul/kku l ;gk rd dgk fd ;K dju oky d vxy iutUe e ;g vkgfr;k mldk vudfo/k ykHk igpkrh gA gekjh xo'k.kk d vulkj ;g ykHk b"oj thokRek dk inku djrk gA ;g tkuuk Hkh t:jh g fd oneU= b"oj d }kjk inRr o fufer gA onk dh dkb Hkh ckr vKku o vlR; ugh gA oneU=k e vlEHko ikFkuk; Hkh ugh g tk mld vu:lk 0;ogkj dju l i.k ok fl) u gkA on dh ikFkuk; lR; o Kku l ifji.k gA vr% onk e tk dgk x;k g og thou e vo"; ikIr gkrk g vFkok og lHkh ykHk mldk ikIr gkr g tk 0;fDr ;K dk djrk gA ;g Hkh mYy[kuh; g fd ;K dk djr le; tc ;Kd.M dh vfXu eUn gku yx rk mle vko";drkulkj lfe/kk; j[kr jguk pkfg; ftll gekjh vkgfr;k rt ok ip.M vfXu l l{e gkdj ok;e.My o vkdk"k e nj&nj rd igprh jgA

vc ;K dju dh fof/k Hkh tku yr gA ikr%dky ;K l io rFkk lk;dky ;K d lk"pkr ^^lU/;kikluk ;K** dju dk fo/kku gA lU/;k dk vFk g fd b"oj dk HkyhHkkfr /;ku dj mldh Lrfr] ikFkuk o mikluk djukA lU/;k dh lokxi.k vfr mRre fof/k egf'k n;kuUn ljLorh thu ip egk;K fof/k o lLdkj fof/k iLrdk e iLrr dh gA lU/;k d ckn rFkk tc l;kn; gk x;k gk] rc vfXugk= fd;k tkrk gA lcl igy xk;=h dk eU= dk ikB dj yuk pkfg; ftll eu ;K djr le; b/kj&m/kju Hkkx vkj ;K e gh ,dkx jgA bld ckn rhu vkpeu vFkkr vYi ek=k e ty ihu dk fo/kku g tk vkpeu d eU=k dk ckydj fd; tkr gA bll dQ vkfn dh fuofRr gkdj ok.kh dk mPpkj.k "k) gkrk gA bld lk"pkr ck; gkFk dh vtfy e ty ydj nk; gkFk dh vxfy;k l "kjhjLFk bfUn;k d Li"k dju dk fo/kku gA bl ifd;k }kjk b"oj l bfUn;k o "kjhj d LoLFk] fujkx o cyoku gku dh ikFkuk gA rRi"pkr 8 Lrfr&ikFkuk o mikluk d eU=k dk mud vFk dk fopkj djr g, ;k iFkd l ckydj xk;u ok mPpkj.k dju dk fo/kku gA bld ckn nhid tyk dj mll dij dk iTtofyr dj ;K d.M e ml dij dh vfXu dk vk/kku eU=k dk ckydj fd;k tkrk g tk ek= 25 l 30 ld.Ml e gk tkrk gA vXU;k/kku d ckn pkj eU=k dk ckydj dk'B dh 3 lfe/kk; inhlr vfXu ij j[ku dk fo/kku gA bu lfe/kkvk dk vkdkj yxHkx 8 vxy dh pkMkb ftruk gkuk pkfg;A lfenk/kku d ckn ,d gh eU= dk ikp ckj ckydj ?kr dh vkgfr;k nh tkrh gA rRi"pkr pkjk fn"kkvk e ty flpu dk fo/kku gA ;g lHkh dk; iFkd&iFkd eU=k dk cky dj fd; tkr gA tyflpu d ckn ?kr dh nk vk?kkjkT; o nk vkT;Hkkx vkgfr;k nh tkrh gA

bld ckn nfud ;K dh vkgfr;k nh tkrh gA ikr%dky dh 12 vkgfr;k ,o lk; dky dh Hkh 12 vkgfr;k gA bud ckn

;Kdrrk ; teku ;fn vf/kd vkgfr nuk pkg rk xk;=h eU= dk ckydj nu dk fo/kku gA bld ckn i.kkgfr rhu ckj ^vk lo o i.k LokgkA* ckydj dh tkrh gA bll io ;fn ; teku fLo'VÑnkgfr o iktkiR;kgfr nuk pkg rk lEcfU/kr eU=k dk cky dj n ldr gA bl idkj l nfud ;K lEiUu gkrk gA cgr l ykx ikr% o lk; ;K u dj lk;dky d 12 eU=k dk Hkh ikr%dky d ;K dh vgfr;k d ckn ckydj ;K e lfEefyr dj vkgfr;k n nr gA bl idkj l ;K i.k gk tkrk gA ;K d ckn fgUnh e ^;K:lk iHkk gekj Hkko mTtoy dhft,] NkM no Ny diV dk ekufld cy nhft,* ;g ;K ikFkuk Hkh dh tk ldrh g vkj mld ckn “kkfUrikB dk eU= ckydj ;K lekIr gk tkrk gA ;g vfXugk= ok no;K dju dh fof/k o fo/kku gA ;g Hkh /;ku j[kuk vR;ko”;d g fd ;K i.kr% vfglkRed de g] ble fdfpr fd lh ik.kh dh fglk fuf'k) gA ,lk gku ;K ij ;K] ;K u gkdj ikide cu tkrk gA

lHkh eu'; “okl e e[;r% vkDlhtu yr vkj dkcu MkbvkDlkbM xl NkMr gA bll ok; inf'kr gkrh gA eu'; dk drO; g fd og viu i;ktu l dh xbl nf'kr ok; dk “k) djA blh idkj ge viu futh i;ktuk ;Fkk Hkktu idku] oL= /kku rFkk eye= dk fo ltu dju vkfn dk;k l ok; lfgr idfr dk Hkh inf'kr djr gA gekjk drO; g fd jkx o n%[kk l cpu o vU;k dk cpku d fy, ge ok;] ty o idfr dk “k) j[k o ;K vkfn fd;k dj lcdk “k) djA tk eu';] L=h o i:'k] ,lk ugh djr og iki d Hkkxh gkr gA ;K u djuk iki djuk g D;kfd bll gekj }kjk fd; x; fHkUu&fHkUu idkj d in'k.kk l vU; ikf.k;k dk n%[k gkrk gA ;fn eu'; bl tUe o ij tUek e l[kh gkuk pkgrk g rk ml ;K vo”; djuk pkfg;A ;K dk vU; dkb fodYi ugh gA ;fn ugh djxk rk dkykUrj e ifj.kke b”oj dh 0;oLFkk l bld lEe[k vo”; vkrk gA

/ke dh ,d “kCn dh ,d ifjHkk'kk g ^^lR;kpj.k**A lR;kpj.k e ekrk&firk dh lok lJ'kk lfgr ikf.kek= ij n;k o mud Hkktu dk icU/k dju d lkFk] fo}kuk vfrfFk;k dh lok] mul ln0;ogkj] mudk vUu] /ku] oL= nku }kjk lEeku ,o ;Fkkle; b”ojkikluk&lU/;k o vfXugk= dY;k.k d fgr'kh lc eu';k dk vfuok; :lk l djuk pkfg;A tk djxk og b”oj l bu dek dk ykHk o Qy ik;xk vkj tk ugh djxk og b”ojh; n.M dk Hkkxh gkxkA ;g geu cgr l{ki e vfXugk= no ;K ij idk”k Mkyk gA ;K ij cgr lkfgR; miyC/k gA ;K loJ'B de dk dgr gA bldk vFk g nok dh itk] mul lxfrdj.k vkj lcdk ik=rkulkj nku nukA bld vulkj ekrk&firk&vkpk;k o fo}kuk dk lEeku o lok&lRdkj Hkh ;K gA bud lkFk lxfrdj.k dj mud Kku o vuHko dk ikIr djuk vkj mll tudY;k.k o ikf.k;k dk fgr djuk Hkh ;K gA blh idkj l viuh lkeF;kulkj lik=k dk vf/kd l vf/kd nku ndj n”k o lekt dk lejl] ,djl o x.k&de&LoHkko d vulkj ;Fkk”kfDr l[k&lfo/kk; inku djuk Hkh ;K d vUrxr vkrk gA y[k dk lekIr dju ij ;g voxr djkuk g fd bl y[k e LFkkukHkko d dkj.k ge ;K d eU=k dk iLrr ugh dj ld gA bld fy, ikBd uV ij miyC/k iLrd dk MkmuykM dj ldr g ;k vk; lekt d iLrd foØrkvk l Ø; dj ldr gA ekxn”ku gr ;V;c ij miyCèk ohfM;kt dk Hkh n[kk tk ldrk gA

बोध कथायें

–महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी

1&eu thr] tx thr

txnx# “kdjkpk;Z us mudh f”k"; us iNk&^^txr dks thr ldrk g**

txnx# cksys&^^tks eu dks thr ysrk gSA**

2&eu dks o”k esa jf[k;s

egkjkt tud ls ,d czkã.k fdlh us ,d iz”u iwNkA ^^;g eu esa >xM+rk D;ksa ugha**\ tud ,d o`{k ds ikl [kMs Fks] cksys&^^;g o`{k esa >xM+ nsrk vkidk iz”u dk mÙkj nsA**

iNuokys us dgk&^^egkjkt! vki Kkuh gksdj esa[kks dh&lh ckrsa djrs gSA o`{k u vkidks ugha idM+ j[kk] vkius o`{k dks idM+ j[kk gSA ;g o`{k rks tM+ g] ;g vkidks D;k idM+xk**

tud us dgk&^^rqe Bhd dgrs gks Hkkbz! ;g o`{k tM+ gSA blus ugha] eSaus bldks idM+ j[kk gSA ijUrq ;kn j[kks] eu Hkh rks tM+ gSA mlus rks rqEgsa idM+ ugha j[kkA fQj esa>l D;ksa dgrs gks fd og NksM+rk ugha**

;g gS lk/ku eu dks o”k esa djus dk! eu dh okLrfodrk dks le>ks! ;g tM+ gSA bles dksbZ “kfDr ugha “kfDr rqEgkjs vUnj gSA ,slk le>ksxs rks eu o”k esa vo”; gks tk;sxkA

3&igys eu dks fuey djks

,d egkRek FksA fdlh ?kj esa fHk{kk ekaxus x;sA ?kj dh noh us fHk{kk nh vkSj gkFk tksM+dj cksyh&^^egkRek th] dksbZ min”k nhft;sA**

egkREkk us dgk&^^vkt ugha] dy min”k nwxkA**

noh us dgk&^^rks dy Hkh ;gha ls fHk{kk yhft;A**

nljs fnu tc egkRek fHk{kk yus dks fy;s pyu yxs rks viu deaMy esa dN xkscj Hkj fy;k] dN dMk] dN ddM+ deaMy ydj noh ds ?kj igapA noh us mudks fy;s mlh fnu cgqr vPNh [khj cukbZ FkhA mlus ckcnke vkSj fiLrs Mky FksA egkRek us vkokt nh&^^vk…e rrs lr!**

noh [khj dk dVksjk ydj ckgj vkbZA egkREkk us viuk deaMy vkxs dj fn;kA noh mlesa [khj Mkyus yxh rks fd ogka xkscj vkSj dMk Hkjk iMk gSA #ddj cksyh&^^egkjkt ;g deaMy rks xUnk gSA**

egkRek us dgk&^^gka] xUnk rks gSA blesa xkscj g] dMk g] ijUrq vc djuk D;k g! [khj Hkh blh esa Mky nksA**

noh us dgk&^^ugha egkjkt! blesa Mkyus ls rks [khjc gks tk;xhA e>s nhft, ;g deaMy] esa blls “kq) dj ykrh gSA**

egkjkt cksys&^^vPNk esa] rc Mkyxh [khj] tc dMk&ddj lkQ gks tk;**

noh cksyh&^^gk**

egkRek cksys&^^;gh esjk min”k gSA eu esa tc rd fpUrkvksa dk dMk&djdV vkSj cjs laLdkjksa dk xkscj Hkjk g] rc rd min”k dk ver dk ykHk ugha gksxkA min”k dk ver ikuk g rks igys vius eu dks “kq) djuk pkfg,] fpUrkvksa dk nj dj nuk pkfg,] cjs laLdkjksa dk lekIr dj nuk

pkfg,A rHkh b"oj dk uke ogk ped ldrk g vkj rHkh l[k vkj vkuUn dh T;kfr tkx mBrh gA**

dchjk eu fuey Hk;k] tl xxk uhjA
ihN&ihN gfj fQj] dgr dchj dchjAA

4&bfUn;k dk o"k e j[ku dh fof/k

Lokeh jkerhFk tc ikQlj rhFkjke Fk] rc ykgkj d ,d dkyt e i<kr FkA og jgr Fk ygkjh njokt k eA dkfyt l ?kj dk vk jg Fk] rk ygkjh njokt e mUgku ,d 0;fDr dk Vkdjh e j[kdj uhc cpr g, n[kkA ihy jx d jlHkj uhc FkA e[k e ikuh vk x;kA ftºok u dgk& ÞØ; dj yk] mudk Lokn cgr mÙke gA

rhFkjke FkkMh nj #dA fQj vkx c< x;A vkx tkdj ftºok fQj epyh] ml u dgk&^uhc vPN rk Fk] uhc [kku e gkfu D;k**\

rhFkjke mYV vk;A uhcvk dk n[kkA okLro e cgr mÙke FkA mUg n[kdj fQj ?kj dh vkj py iMA FkkMh nj x; rk ftºok fQj fpYyk mBh&Þuhc dk jl rk cgr vPNk gA uhc rk [kku dh pht gA ml [kku e iki D;k g \^^

rhFkjke iuh uhcoky d ikl vk x;A nk uhc eky y fy;A ?kj igpA noh l dgk& Þpkd ykvkA^^ ml u pkd ykdj j[k fn;kA rhFkjke pkd dk uhc d ikl vkj nkuk dk viu le{k j[kdj cB x;A cB jg] n[kr jgA vUnj l vkokt vkb&ÞbUg dkVk] dkVu e D;k gkfu g\^^

jkerhFk u pkd mBk;k vkj ,d uhc dk dkV fn;kA e[k e ikuh Hkj vk;kA vUnj l fQj çj.kk gb&Þbl p[kdj rk n[kk] bl dk jl cgr mUke gA^^

jkerhFk u ,d VdM dk mBk fy;k] ftºok d lehi y x;A uhc dk ml lkFk yxu ugh fn;kA vUnj l fdlh u idkj dj dgk&Þr D;k bl ftºok dk nkl g\ tk ;g ftºok dgxh] ogh djxk\ ftºok rjh g] r ftºok dk ughA^^

lehi [kMh iRuh u dgk& Þ;g D;k djr gk\ uhc dk yk;] bl dkVk] vc [kkr D;k ugh\^^

ftºok u dgk& Þ'kh?krk djkA uhc dk Lokn cgr mÙke gA^^

jkerhFk 'kh?krk l mBA dV vkj fcuk dV g, nkuk uhcvk dk mBkdj xyh e Qd fn;k vkj çlUurk l ukp cB&^e thr x;k!^^

;g g bfUæ;k dk o'k e dju dh fof/k !

cgr o"kk dh ckr gA e rc NkVk Fkk] ijUr e ugh] ;g 'kjhj NkVk FkkA e rk lnk ,d&lk jgrk gA ;g 'kjhj gh ?kVrk&c<rk jgrk gA

e Fkk viu xko ^tykyij tgk^ eA bld fudV gh egUrk dk ,d ckx FkkA e xko l bl ckx dh vkj tk jgk FkkA ekx e ,d cgr cMk tkgM vkrk Fkk] ftl elíhokuk dgr FkA ;g tkgM vHkh dN njh ij Fkk fd ihN l 'kkj lukb fn;kA eu eMdj n[kk&xko d ,d elyeku pk/kjh ?kkM ij fpid cB Fk vkj ?kkMk ljiV nkMk vkrk FkkA dN ykxk u ?kkMk jkdu dk ç;Ru Hkh fd;k] ij og #dk ughA pk/kjh th dk e tkurk FkkA Åph vkokt e iNk&Þpk/kjh th! bruh r th l dgk tk jg gk\ß

pk/kjh th ?kkM l fpiV&fpiV cky&^^bl ?kkM dk irk g] e> ughA e> rk xtjkr tkuk gA^^

eu vk'p; l lkpk fd xtjkr rk gekj xko d nf{k.k e gA pk/kjh th mÙkj dh vkj D;k Hkkx tkr g\ rHkh ?kkMk igpk elíhokuk d ikIA 'kk;n lkeu l dkb oLr fn[kkb nh Fkh mlA og tkj l mNykA e Hkh pk/kjh lkgc d ikl elíhokuk e tYnh l Hkkxdj igpkA pk/kjh th i;klr l?k"k d i'pkr jdkc l viuk iko NMku e lQy gk x; FkA tkgM d dhpM e yFkiFk FkA mudh ixMh ij rj jgh FkhA ?kkMk nljh vkj tk jgk Fkk vkj pk/kjh th dhpM e jx&jxk; ckgj vku dk ç;Ru dj jg FkA rc irk yxk fd o xtjkr dh fty& dpgjh e mifLFkr gku d fy,A ?kj l fudy FkA xtjkr dh dpgjh e igpu dh ctk; ml tkgM e igp x;] D;kfd ?kkMk o'k e ugh jgkA

;gh n'kk gkrh g ?kkM d o'k e u jgu l! luk] luk] luk! bl ?kkM ¼eu½ dk o'k e j[kk] ugh rk Hkxoku dh dpgjh e igpu d LFkku ij ;g vkidk iki d dhpM e igpk nxkA ixMh vyx mrjxh] diM vyx [kjkc gkx vkj m/kj ;fn le; ij ugh igp rk dpgjh e edíek [kkfjt gk tk,x&

eu d gkj gkj g] eu d thr thr A
ikj cã dk ikb;] eu d gh çrhrAA

5&Qy e puu vk;k Fkk

,d Fk lTtu thoujkeA ; lB T;kfrLo:i d iMkl e jgr Fk&,d >kiM eA mUg irk yxk fd lB d cgr&l mÙke edku gA mud ikl tkdj o cky&Þved edku e> n nhft;] e ogk fu/ku cPpk d fy, ,d ikB'kkyk vkjEHk d:xkA ,d fuH'kYd vk"k/kky; cukÅxk vkj çfrfnu lRlx gkxkA ogk vk/;kfRed dFkk, gkxh] ;K gkxkA tk Hkh fdjk;k vki ekxx] e n nxkA^^

T;kfrLo:i cky&^^re rk cgr vPN 0;fä gkA bru J"B dke re ej edku e djkx rk e fuH'kYd nxkA fdjk;k ugh yxkA re edku dk LoPN j[kkA ; mÙke dke djkA e> fdjk; dh vko';drk ughA^^

thoujke igp ml edku eA ogk jgu yxA vkjEHk e mUgku edku dk LoPN j[kk] ijUr dN gh fnu 0;rhr g, Fk fd thoujke d dN tvkjh fe= vk x;A igy rk'k 'k: gb] fQj tvk [kyk tku yxkA çfrfnu tvk gkrk] rk 'kjkc Hkh mMu yxhA /kj&/kj og edku Mkdvk dk vìk cu x;kA gj çdkj d iki ogk gku yxA fdlh u T;kfrLo:i l f'kdk;r dh&ÞlB th! tk edku vkiu ;K vkj lRlx d fy, fn;k Fkk] og rk Mkdvk dk vìk cu x;k g!ß

T;kfrLo:i cky&Þ,lh ckr g \ß

f'kdk;r djuoky u dgk& Þth! e viuh vk[kk l n[kdj vk;k gA

T;kfrLo:i u viu euhe dk cyk;k] dgk& Þthoujke l dgk fd edku [kkyh dj nA geu iki d fy, og edku ugh fn;k FkkAß

NkV euhe thoujke d ikl igpA thoujke u dN vuu;&fou; dhA dN euhe lkgc dk gkFk xe dj fn;kA mUgku tkdj fjikV n nh& Þlc Bhd gA fdlh u vufpr f'kdk;r dj nh FkhAß

vHkh cgr nj ugh gbZ Fkh fd lB d ikl iu% f'kdk;r igqphA vcd mUgksu cM euhe dk HktkA thoujke u cM euhe dh vuu;&fou; dhA mld iko iMkA çfrKk dh fd og viuk l/kkj djxkA cM euhe u lkjh fjikV n nhA lB T;frLo:lk cky&þckr cMh g] ijUr ;fn og l/kjuk pkgrk g] rk mlI dN le; nuk pkfg,A^^

dN le; fn;k x;kA ijUr fQj f'kdk;r vkb fd thoujke d y{k.k igy l Hkh cj g, tkr gA vcd lB u viu cV dk HktkA thoujke u mlI Hkh /kk[kk nu dk ç;Ru fd;k] ijUr og /kk[k e ugh vk;kA odhy l ukfVl fnyk fn;k fd þedku [kkyh djkAß thoujke u ukfVl fy;k gh ugh edíek gvkA okj.V tkjh g,A ifyl igph rk thoujke u mldk Hkh fj'or nu dk ç;Ru fd;k] ijUr vc dkb Hkh pky pyh ughA jk;k&fpYyk;kA vUr e edku NkMuk iMkA

;g thoujke g vkRek] T;kfrLo:i g b'oj] vkj edku g 'kjhjA bl edku dk dkb fdjk;k ughA blhfy; fey bl edku d }kjk de] de d }kjk mikluk vkj mikluk }kjk çHk dk n'ku djkA mld LFkku ij cuk fn;k blds ikik dk vìkA rc NkVk euhe vk;k&dkb NkVh chekjh&NkVh n?kVukA cMk euhe g&rfud cMk jkxA lB dk yMdk g vf/kd Hk;kud jkxA ukfVl g&ân; dh ncyrk] vUrfM;k dk dk; u djuk] vk[kk e ekfr;kfcn mrjuk] dkuk l de lukb nukA uoI cdMkmu edíek gA vfUre jkx okj.V gA ifyl g eR;A og vk tk; rk fQj vk"kf/k;k dh fj'or ugh pyrhA rc thoujke dk ;g edku NkMuk gh iMrk gA

सूचना

Lokeh ;kx'ojkuUn ljLorh th }kjk rikHkfe vkJe e fuEufyf[kr frfFk;k d nkjku ;kx ,o ikÑfrd fpfdRlk d f'kfoj vk;kftr fd; tk jg gA

दिनांक 14 से 20 सितम्बर 2023 **दिनांक 23 से 29 सितम्बर 2023**

itkdj.k gr ekckby uEcj % 07500191719 ij lEid djA

वर चाहिये

ofnd ifjokj ¼xk;y o';½] 5*5**] vk; 34 o"k] ,e-,l-lh-&ck;kdfeLVh ,o ,e-,l-lh-& U;Vhf'k;u ,M Mk;fVDl] lUnj] xkjh] 'kkdkgkjh] l'khy] xg dk;k e n{k dU;k d fy, ;kX; oj pkfg;A ifjokj yf/k;kuk e fLFkr fey dk O;olk; e dk;jrA cM Hkkb ,o cgu dh 'kknh gk pdh gA

lid dj % ';ke vk;] ek- & 9896401919

BASANTA MAL SAT PRAKASH

Manufactures of : All Kinds of Shawls & Lohies
M : 094171-36756, 70877-54848

GHASS MANDI, LUDHIANA

gekj ikl cch lk¶V 'kky] itk 'kky] LVky] feDlpj ykb] tdV 'kky] d<kb 'kky] d'kehyku lyu DykFk] pd 'kfVx DykFk e gj idkj dh ojk;Vh curh g vkj jV Hkh de gA Ñi;k ,d ckj t:j lEid djA

ARYA TEXTILE

Manufactures of :
All Kinds of Handloom Bed Sheets & Furnishing Fabrics
M : 98963-19774, 95412-88174, 98964-01919

Specialist in : BABY BLANKETS & READYMADE CURTAINS

ge Readymade Curtains, Jackets, Guddad, Loi, Mat, Baby Soft Shawls, Baby Blankets, Acrylic Blankets, Rajai Khol (Dohar), Rajai, Comforter, AC Set, Velvet Joda & 3D Bed Sheets, Dhari etc. vkfn d fuekrk gA bldh vykok fedo ikyj dEcy (Mink & Polar) vkfn Hkh cpr g vkj jV Hkh de gA Ñi;k ,d ckj t:j lEid djA

Factory :
Opp. RK School
Kutani Road, Panipat-132103

Shop :
665/4, Pachranga Bazar,
Panipat-132103

Baby Blankets / Mink Blankets / Quilts / Comforters / Jackets / Duvet Covers / Shawls / Fleece Blankets

विभिन्न रोगों के उपचार में यज्ञ का प्रयोग

fofHkUu jksxksa esa ;K esa fo"ks'k vkS"kf/k;ksa dk ykHk

1& VkbQkbM% uhe] fpjk;rk] firikiMk] f=Qyk lEHkkx "k|) xkS ?k`r fefJr /kw.khA

2& Tojuk"kd% vtokbu dh /kw.kh vkx ij nsA

3& utyk] tqdke] fljnnZ% eqUDdk dh /kw.kh vkx ij nsA

4& u=T;ksfr o/kZd% "kgn dh /kw.kh vkx ij nsA

5& efLr"d cyo/kZd% "kgn] lQsn pUnu dh /kw.kh vkx ij nsA

6& okrjksx uk"kd% filiyh dh /kw.kh vkx ij nsA

7& euksfodkj uk"kd% xqXxy vkSj vieekxZ dh /kw.kh vkx ij nsA

8& ekufld mUekn uk"kd% lhrkQy ds cht dh /kw.kh vkx ij nsA

9& ihfy;k uk"kd% nsonk:] fpjk;rk] ukxjeksFkk] dqVdh] ok;foMaxA

10& e/kqesg uk"kd% xqXxy] ykHkku] tkequ o`{k dh Nky] djsyk dk MBy lEHkkx "k|) xkS ?k`r fefJr /kw.kh nsA

11& fpr Hkze uk"kd% dpwj] [kl] ukxjeksFkk] egqvk] lQsn pUnu] xqXxy] vxj] cMh bykbph] ujoh vkSj "kgn lEHkkxA

12& {k; uk'kd% xqXxy] lQsn pUnu] fxyks; cklk ¼vMwlk½ 100&100 xzke pw.kZ dj 50 xzke] 100 xzke 'k|) xkS ?k`r ;qäA

13& eyfj;k uk'kd% xqXxy] ykHkku] diwj] dpwj] gYnh] nk:gYnh] vxj] ok;foMax] cky NM+ ¼tVkekalh½ op] nsonk:] dB] vtokbu] uhe iÙkh] lEHkkx p.kZ 'k) xkS ?k`r feykdj gou djrs FkkA /kw.kh nsA

14& lojksxuk'kuh ¼vijkftr /kwi½ xqXxy] op] xU/kd] r.kk] uhe iÙkh] vkd iÙkh] vxj] jky] nsonk:] fNydk lfgr ekLa] lEHkkx 'k) xkS ?k`r ;qäA

15& lf/kxr Toj uk'kd% tkMk dk nnZ½ lEHkky ¼fuxq.Mh½ d iÙkh] xqXxy] lQsn ljlksa] uhe iÙkh] jky lEHkkx p.kZ ?k`r fefJr /kw.khA

16& fuekfu;k uk'kd% iqgdj ey] op] ykHkku] xqXxy] vMwlk&lEHkkx p.kZ 'k) xkS ?k`r fefJr /kw.kh nsA

17& tqdke uk'kd% [kjklkuh vtokbu] tVkekalh] i'kehuk dkxt] yky cjkZ lEHkkx p.kZ 'k) ?k`r ;qä /kw.kh nsA

18& ihul ¼tqdke dk fcxMk :i½ cjxn iÙkh] rylh iÙkh] uhe iÙkh] ok;foMax] lgtu dh Nky lEHkkx p.kZ esa /kwi dk pwjk feykdj /kw.kh nsA

19& "okl&dQ uk'kd% cjxn iÙkh] ryLkh iÙkh] op] iqgdj ey] vMwlk&i= lEHkkx p.kZ 'k) xkS ?k`r ;qä /kw.kh nsA

20& flj nnZ uk'kd% dkyh fry vkSj ok;foMax p.kZ 'k) xkS ?k`r ;qä /kw.kh nsA

21& ppd&[kljk uk'kd% xqXxy] ykHkku] uhe iÙkh] x/kd] diwj] dkyh fry vkSj ok;foMax p.kZ 'k) xkS ?k`r ;qä /kw.kh nsA

22&ftOgk rkyq jkx uk'kd% eygVh] nonk:] x/kkfojktk] jky] xxy] ihiy] dyt u] dij] ykHkku lEHkkx ?kr ;ä /k.kh nA

23&dlj uk'kd% xyj Qy] v'kkd Nky] vtu Nky] yk/k] ektQy] nk:gYnh] gYnh] [kkijk] fry] tk fpduh lqikjh] 'krkoj] dkd t?kk] ekpjl] [kl] e thu"B] vukjnkuk] lQn pUnu] yky pUnu] x/kk] fojktk] ujoh] tkeu iUk] /kk; d iÙk lEHkkx p.k e nl xuk 'kDdj vkj ,d xuk dlj l fnu e rhu ckj 'k) xk ?kr l gouA

वधु चाहिये

vkt pkoyk] lLdkjh] lUnj] xkjk] 'kkdkgkjhA dn&5 QV 8 bp] vk;q 28 o"k] ,e-Vd edfudy vkb-vkb-Vh- tk/kiqj] orEku e ek#fr lqtqdh dEiuh xMxko e fMIVh eu tj d in ij dk;jr ¼oru 15 yk[k okf"kd id t½] tky/kj] itkc e vkokl] grq o/kq tk lUnj] l'khy] lLdkjh gkA lEid dj& Jh ,-ih- pkoyk ¼firk th½ Qku% 8360536336

वधु चाहिये

foiqy vxoky] lLdkjh] lUnj] xkjk] "kkdkgkjhA dn&5 QV 7 bp] vk;q 26 o'k] ch-Vd dEI;Vj lkbl] orEku e cxykj e ,d eYVh u"kuy dEiuh e lk¶Vo;j Moyij bthuh;j d in ij dk;jr¼oru 16 yk[k okf'kd id t½] ihyhHkhr m0i0 e vkokl] gfj}kj e ¶yV] grq ofdx o/kq tk lUnj] l"khy] lLdkjh gkA "kh?k fookgA lEid dj&Jh id t vxoky ¼firk th½& 9219148008] foiqy vxoky&9410418651

वधु चाहिये

Sankalp Chandna, resident of Rajouri Garden, New Delhi. Date of Birth - 13.11.1992, Bachelor in Arts and Diploma in Animation, Worked as Human Resource Assistant in Handloom House, New Delhi for 2 years. Financially independent with salaried and rental income in six figures. Problem of low vision and slightly slow learning. Father: Dr. Anil Chandna, Consultant, Orthodontist. Contact No.: 9811058872, 9868251414

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

- TPM Certified
- ISO / TS - 16949 - 2002 Certified
- ISO - 14001 Certified
- OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2021-2023 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

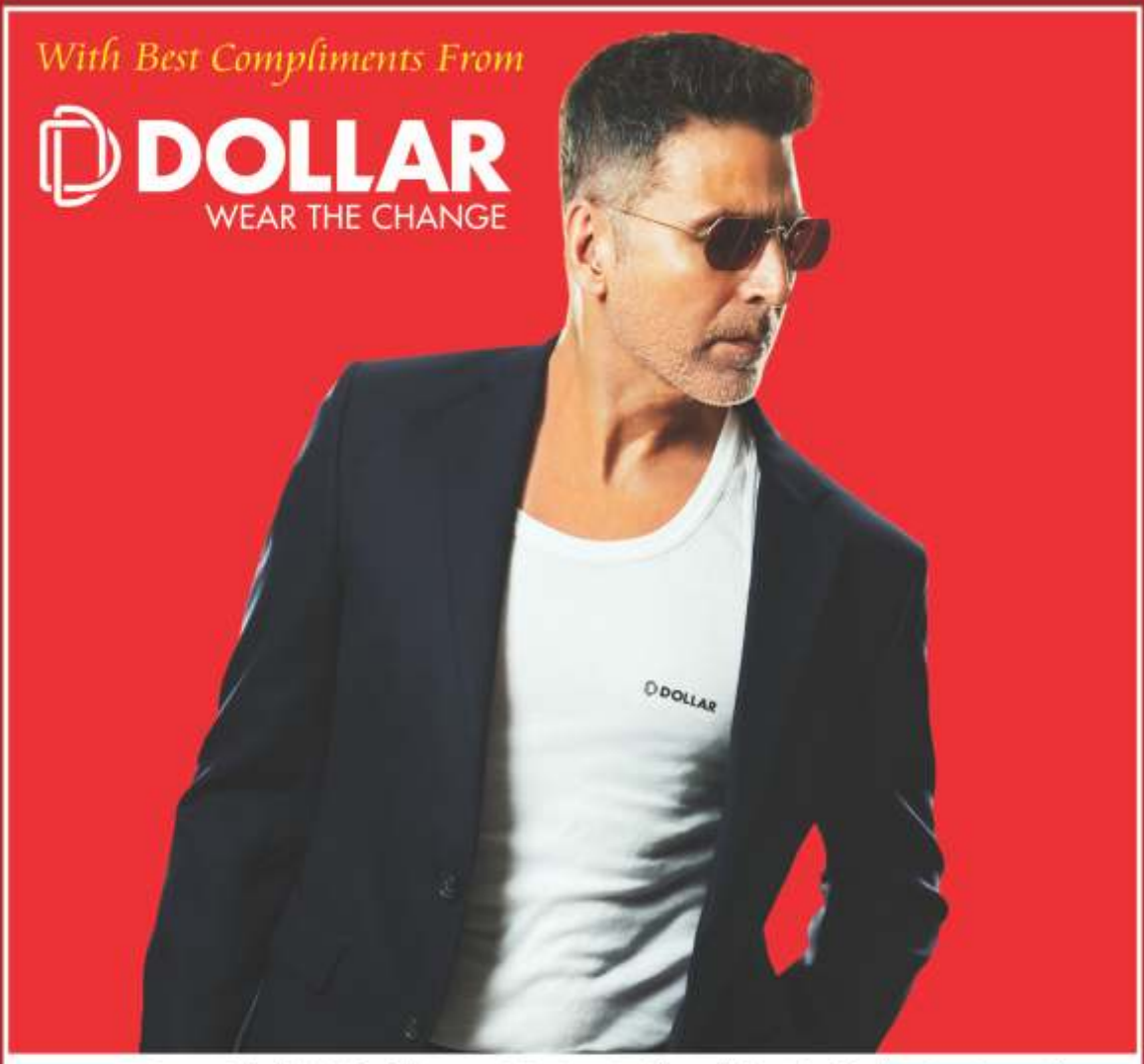

| www.dollarglobal.in | By Online: www.dollarshoppe.in | Also available at the all leading shopping portals

Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBO across india | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com